नवसर्जन संस्कृति

PRGI No. GJHIN/25/A2786

नवसर्जन संस्कृति

PUBLISHED HIINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 01
अंक : 218
दि. 12.05.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

बंगाल चुनाव परिणाम पर सुप्रीम कोर्ट में संग्राम, वोट कटौती और हार के अंतर ने बढ़ाई सियासी हलचल

नई दिल्ली/कोलकाता। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद अब राजनीतिक लड़ाई सड़कों और सभाओं से निकलकर देश की सर्वोच्च अदालत तक पहुंच गई है। चुनाव में करारी हार का सामना करने वाली Mamata Banerjee की पार्टी All India Trinamool Congress ने चुनावी प्रक्रिया और विशेष मतदाता पुनरीक्षण यानी स्पेशल इंटेंसिव रिविजन (SIR) को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। पार्टी का दावा है कि राज्य की कई सीटों पर हार-जीत का अंतर उन वोटों से भी कम था, जिनके नाम SIR प्रक्रिया के दौरान मतदाता सूची से हटा दिए गए। इस मुद्दे को लेकर सोमवार को सुप्रीम कोर्ट में हुई सुनवाई ने बंगाल की राजनीति को एक बार फिर गरमा दिया है।

सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान तृणमूल कांग्रेस सांसद और वरिष्ठ वकील Kalyan Banerjee ने जस्टिस Surya Kant और जस्टिस Joymalya Bagchi की बेंच के सामने दावा किया कि पश्चिम बंगाल की 31 विधानसभा सीटों पर भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच जीत-हार का अंतर उन मतदाताओं की संख्या से कम था, जिनके नाम विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया में काटे गए। अदालत में यह दलील ऐसे समय दी गई, जब बंगाल में मतदाता सूची पुनरीक्षण और वोट कटौती का मुद्दा पहले से ही राजनीतिक विवाद का केंद्र बना हुआ है।

तृणमूल कांग्रेस की ओर से अदालत में कहा गया कि कई सीटों पर मतदाता सूची से हजारों नाम हटाए गए, जबकि जीत का अंतर बेहद कम रहा। कल्याण बनर्जी ने अदालत को बताया कि एक सीट पर उनकी पार्टी के उम्मीदवार की हार केवल 862 वोटों से हुई, जबकि उसी क्षेत्र में 5000 से अधिक मतदाताओं के नाम सूची से हटा दिए गए थे। उन्होंने तर्क दिया कि यदि इतने बड़े पैमाने पर मतदाता वोट डालने से वंचित नहीं हुए होते, तो परिणाम अलग हो सकते थे। पार्टी का कहना है कि यह केवल एक सीट का मामला नहीं, बल्कि कई निर्वाचन क्षेत्रों में इसी तरह की स्थिति देखने को मिली है।

सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने इस मामले को गंभीरता

से लेते हुए टिप्पणी की कि यदि किसी निर्वाचन क्षेत्र में बाहर किए गए मतदाताओं की संख्या जीत के अंतर को प्रभावित करने लायक है, तो यह न्यायिक समीक्षा का विषय बन सकता है। अदालत ने यह भी कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और अन्य नेता स्पेशल इंटेंसिव रिविजन के खिलाफ नई याचिका दायर कर सकते हैं। अदालत की इस टिप्पणी को राजनीतिक हलकों में महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि इससे संकेत मिलता है कि न्यायालय इस मुद्दे पर विस्तृत सुनवाई के लिए तैयार हो सकता है।

हालांकि, दूसरी ओर Election Commission of India ने तृणमूल कांग्रेस की दलीलों का विरोध किया। चुनाव आयोग की ओर से अदालत में कहा गया कि यदि किसी मतदाता या राजनीतिक दल को मतदाता सूची से नाम हटाए जाने पर आपत्ति है, तो उसके लिए वैधानिक प्रक्रिया पहले से मौजूद है। आयोग ने स्पष्ट किया कि ऐसे मामलों में उचित उपाय आयोग के समक्ष अपील दायर करना है और SIR प्रक्रिया से जुड़े विवादों को उसी प्रणाली के तहत निपटाया जाना चाहिए। आयोग का तर्क था कि अदालत को सीधे चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने से बचना चाहिए। सुनवाई के दौरान तृणमूल कांग्रेस की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता Menaka Guruswamy ने अदालत के सामने एक और महत्वपूर्ण तथ्य रखा। उन्होंने कहा कि वर्तमान व्यवस्था में यदि मतदाता सूची से नाम हटाने के खिलाफ दायर अपीलों का निपटारा मौजूदा गति से चलता रहा, तो सभी मामलों को खत्म होने में लगभग चार साल लग सकते हैं। उनका कहना था कि इतनी लंबी प्रक्रिया लोकतांत्रिक अधिकारों को प्रभावित कर सकती है, क्योंकि तब तक चुनावी परिणाम और राजनीतिक परिस्थितियां पूरी तरह बदल चुकी होंगी। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के आंकड़े भी इस विवाद को और अधिक राजनीतिक महत्व दे रहे हैं। राज्य की 294 विधानसभा सीटों में से भाजपा ने 207 सीटों पर जीत दर्ज की, जबकि तृणमूल कांग्रेस को 80 सीटों से संतोष करना पड़ा। चुनाव में रिकॉर्ड स्तर पर 90 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ। भाजपा को कुल 2 करोड़ 92 लाख 24 हजार 804 वोट मिले, जबकि तृणमूल कांग्रेस को 2 करोड़ 60 लाख 13 हजार 377 वोट प्राप्त हुए। दोनों दलों के बीच कुल वोटों का अंतर लगभग 32 लाख से अधिक रहा।

लेकिन तृणमूल कांग्रेस का दावा है कि इन व्यापक आंकड़ों के पीछे कई सीटों पर बेहद करीबी मुकाबले हुए, जहां मतदाता सूची से नाम हटाए जाने का असर निर्णायक हो सकता था। राज्य में SIR प्रक्रिया के दौरान करीब 91 लाख मतदाताओं के नाम काटे जाने की बात कही जा रही है। यदि इसे औसत के रूप में देखा जाए, तो प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में लगभग 30 हजार मतदाताओं के नाम प्रभावित हुए। आंकड़ों के अनुसार 293 सीटों में से 176 सीटों पर जीत का अंतर 30 हजार से कम रहा, जबकि 117 सीटों पर यह अंतर 30 हजार से अधिक था।

राजनीतिक विश्लेषकों के मुताबिक सबसे दिलचस्प तथ्य यह है कि 30 हजार से कम अंतर वाली सीटों में भाजपा की 128 सीटें शामिल हैं। वहीं तृणमूल कांग्रेस की 44 सीटों पर जीत का अंतर 30 हजार से कम रहा। इससे यह बहस और तेज हो गई है कि क्या मतदाता सूची पुनरीक्षण की प्रक्रिया ने चुनावी परिणामों को प्रभावित किया। तृणमूल कांग्रेस का आरोप है कि कई क्षेत्रों में वैध मतदाताओं के नाम हटाए गए, जबकि विपक्ष इसे हार के बाद का राजनीतिक बहाना बता रहा है।

भाजपा की ओर से अब तक इस पूरे मुद्दे पर यही कहा जा रहा है कि जनता ने स्पष्ट जनादेश दिया है और चुनाव पूरी तरह निष्पक्ष तरीके से संपन्न हुए। पार्टी नेताओं का दावा है कि बंगाल की जनता ने परिवर्तन के पक्ष में मतदान किया और परिणाम उसी जनभावना का प्रतिबिंब हैं। भाजपा का यह भी कहना है कि यदि किसी को मतदाता सूची को लेकर शिकायत है, तो उसके लिए चुनाव आयोग और कानूनी प्रक्रिया उपलब्ध है।

इस बीच सुप्रीम कोर्ट की पिछली टिप्पणियां भी अब चर्चा में आ गई हैं। 13 अप्रैल को हुई सुनवाई में अदालत ने कहा था कि यदि बड़ी संख्या में मतदाता वोट डालने से वंचित रह गए हों और वह संख्या जीत के अंतर को प्रभावित करती हो, तो न्यायालय इस पर विचार कर सकता है। जस्टिस जॉयमल्या बागची ने सुनवाई के दौरान कहा था कि यदि किसी सीट पर जीत का अंतर केवल 2 प्रतिशत हो और 15 प्रतिशत मतदाता वोट नहीं डाल पाए हों, तो यह गंभीर चिंता का विषय बन सकता है। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया था कि बाहर किए गए मतदाताओं का मुद्दा उसके विचाराधीन है।

अब इस पूरे विवाद ने बंगाल की राजनीति में नया मोड़ ला दिया है। एक ओर भाजपा अपनी बड़ी जीत को जनता का स्पष्ट समर्थन बता रही है, वहीं तृणमूल कांग्रेस चुनावी प्रक्रिया और मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर न्यायिक लड़ाई की तैयारी में दिखाई दे रही है। राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा भी तेज है कि Mamata Banerjee खुद इस मामले में नई याचिका दायर कर सकती हैं। यदि ऐसा होता है, तो बंगाल चुनाव परिणामों को लेकर कानूनी और राजनीतिक संघर्ष आने वाले दिनों में और तीखा हो सकता है।

केरल कांग्रेस में सत्ता से पहले संतुलन की परीक्षा, मुख्यमंत्री के बाद अब प्रदेश अध्यक्ष पद पर बढ़ी सियासी हलचल

कोच्चि। केरल में कांग्रेस नेतृत्व वाले यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट की सत्ता में वापसी के बाद जहां कार्यकर्ताओं और समर्थकों में उत्साह का माहौल है, वहीं सरकार गठन की प्रक्रिया ने पार्टी के भीतर नए शक्ति संघर्ष को जन्म दे दिया है। मुख्यमंत्री पद को लेकर चली लंबी राजनीतिक कवायद अभी पूरी तरह समाप्त भी नहीं हुई थी कि अब Kerala Pradesh Congress Committee अध्यक्ष पद को लेकर पार्टी के अंदर खींचतान तेज हो गई है। कांग्रेस आलाकमान के सामने अब केवल मुख्यमंत्री चुनने की चुनौती नहीं, बल्कि संगठन और सरकार के बीच ऐसा संतुलन बनाने की जिम्मेदारी भी है, जिससे पार्टी के विभिन्न गुटों, समुदायों और नेताओं को संतुष्ट रखा जा सके। केरल कांग्रेस की राजनीति हमेशा से समीकरणों, गुटबाजी और सामाजिक संतुलन के इर्द-गिर्द घूमती रही है। यही कारण है कि यहां किसी एक पद का फैसला केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं होता, बल्कि उसके साथ कई राजनीतिक संदेश और आंतरिक संतुलन भी जुड़े होते हैं। इस बार भी स्थिति कुछ ऐसी ही दिखाई दे रही है। मुख्यमंत्री पद के लिए पिछले कई दिनों से चली चर्चाओं और लॉबिंग के बीच अब प्रदेश अध्यक्ष पद को लेकर नई राजनीतिक गतिविधियां शुरू हो गई हैं। पार्टी के भीतर यह चर्चा तेज हो गई है कि मौजूदा केपीसीसी अध्यक्ष Sunny Joseph को नई सरकार में मंत्री बनाया जा सकता है। यदि ऐसा होता है, तो प्रदेश अध्यक्ष का पद खाली हो जाएगा और उसी के साथ कांग्रेस के भीतर नए शक्ति संतुलन की लड़ाई शुरू हो जाएगी।

सूत्रों के मुताबिक मुख्यमंत्री के नाम की औपचारिक घोषणा से पहले ही कई वरिष्ठ नेताओं ने दिल्ली और केरल दोनों जगह अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। कांग्रेस हाईकमान तक पहुंच बनाने और समर्थन जुटाने की कोशिशें तेज हो चुकी हैं। शुरुआती चर्चाओं में सबसे प्रमुख नाम वरिष्ठ सांसद Kodikunnil Suresh का सामने आ रहा है। हाल ही में कांग्रेस अध्यक्ष Mallikarjun Kharge के साथ उनकी मुलाकात के बाद राजनीतिक हलकों में अटकलें और तेज हो गई हैं। पार्टी के भीतर यह माना जा रहा है कि कोडिकुन्निल सुरेश के लंबे संगठनात्मक अनुभव और दलित समुदाय में उनकी पकड़ उन्हें इस पद का मजबूत दावेदार बनाती है।

हालांकि मुकाबला केवल एक नाम तक सीमित नहीं है। कांग्रेस के कई अन्य वरिष्ठ नेता और सांसद भी इस दौड़ में बताए जा रहे हैं। Benny Behanan, Anto Antony और Shafi Parambil जैसे नेताओं के नाम भी प्रदेश अध्यक्ष पद की चर्चा में शामिल हैं। इनमें से प्रत्येक नेता अलग-अलग सामाजिक और राजनीतिक आधार का प्रतिनिधित्व करता है। यही वजह है कि कांग्रेस नेतृत्व के लिए यह फैसला और अधिक जटिल हो गया है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस बार केरल कांग्रेस में केवल नेतृत्व चयन का सवाल नहीं है, बल्कि सत्ता और संगठन के बीच संतुलन कायम रखने की चुनौती भी है। यदि मुख्यमंत्री पद किसी एक समुदाय या गुट को जाता है, तो प्रदेश अध्यक्ष पद दूसरे गुट या समुदाय को देकर संतुलन साधने की कोशिश की जा सकती है। केरल की राजनीति में जातीय और धार्मिक समीकरण हमेशा से बेहद प्रभावशाली रहे हैं। कांग्रेस को विशेष रूप से ईसाई, मुस्लिम, पिछड़े वर्ग और दलित समुदायों के बीच अपने राजनीतिक आधार को संतुलित रखना पड़ता है। यही कारण है कि प्रदेश अध्यक्ष के चयन में केवल वरिष्ठता या संगठनात्मक क्षमता ही निर्णायक नहीं होगी। पार्टी नेतृत्व को यह भी देखना होगा कि कौन नेता विभिन्न गुटों को साथ लेकर चल सकता है, युवा कार्यकर्ताओं में स्वीकार्यता रखता है और चुनावी राजनीति में प्रभावी चेहरा साबित हो सकता है। कांग्रेस के भीतर युवा नेतृत्व को आगे लाने की मांग भी लगातार उठती रही है। ऐसे में कुछ नेता यह तर्क दे रहे हैं कि पार्टी को अब संगठन में नई पीढ़ी को बड़ी भूमिका देनी चाहिए।

दूसरी ओर, पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का एक वर्ग अनुभव और संतुलित नेतृत्व को प्राथमिकता देने के पक्ष में है। उनका मानना है कि सत्ता में वापसी के बाद संगठन को संभालने के लिए ऐसे नेता की जरूरत होगी, जो सरकार और संगठन दोनों के बीच तालमेल बनाए रख सके। केरल कांग्रेस की राजनीति में अक्सर यह देखा गया है कि यदि संगठन और सरकार के बीच समन्वय कमजोर पड़ता है, तो उसका सीधा असर पार्टी की स्थिरता और चुनावी प्रदर्शन पर पड़ता है।

कांग्रेस आलाकमान फिलहाल बेहद सतर्क रणनीति के साथ आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है। पार्टी नेतृत्व यह नहीं चाहता कि सरकार गठन के शुरुआती चरण में ही गुटबाजी खुलकर सामने आए। इसलिए दिल्ली स्तर पर लगातार बातचीत और फीडबैक का दौर जारी है। माना जा रहा है कि मुख्यमंत्री पद की अंतिम घोषणा के साथ ही संगठनात्मक बदलावों पर भी फैसला लिया जा सकता है, ताकि असंतोष को सीमित रखा जा सके।

ट्रांसफॉर्मर खरीद घोटाले में सेंथिल बालाजी को सुप्रीम कोर्ट से झटका, सीबीआई जांच पर रोक से इनकार

चेन्नई। तमिलनाडु की राजनीति और प्रशासनिक तंत्र में कथित 397 करोड़ रुपये के ट्रांसफॉर्मर खरीद घोटाले को लेकर चल रही जांच ने एक बार फिर बड़ा मोड़ ले लिया है। राज्य के पूर्व बिजली मंत्री V. Senthil Balaji को उस समय बड़ा झटका लगा जब सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में सीबीआई जांच पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। इस फैसले के बाद अब जांच प्रक्रिया आगे बढ़ने का रास्ता साफ हो गया है और राजनीतिक हलकों में इस घटनाक्रम को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

सुप्रीम कोर्ट की जस्टिस Vikram Nath और जस्टिस Sandeep Mehta की पीठ ने सोमवार को इस मामले में दायर विशेष अनुमति याचिका (SLP) पर सुनवाई की। याचिका में मद्रास हाई कोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें कथित अनियमितताओं की सीबीआई जांच के निर्देश दिए गए थे। हालांकि सर्वोच्च अदालत ने स्पष्ट कर दिया कि परिस्थितियों के आधार पर किसी भी मामले में सीबीआई जांच का आदेश दिया जा सकता है, भले ही याचिका में इसकी विशेष मांग न की गई हो।

सुनवाई के दौरान तमिलनाडु जनरेशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन कॉरपोरेशन यानी TANGEDCO की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ दवे ने दलील दी कि मद्रास हाई कोर्ट में सीबीआई जांच की कोई औपचारिक मांग नहीं रखी गई थी और पूरा मामला राजनीतिक रूप से प्रेरित है। उन्होंने यह भी कहा कि जांच को किसी विशेष एजेंसी को सौंपने का निर्णय उचित आधार के बिना नहीं लिया जाना चाहिए। हालांकि सुप्रीम कोर्ट ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया और स्पष्ट टिप्पणी की कि अदालत किसी भी मामले में जांच के स्वरूप और आवश्यकता को स्वयं तय कर सकती है।

अदालत ने अपने रुख में कहा कि यदि किसी मामले में तथ्यों और परिस्थितियों से यह संकेत मिलता है कि स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच की आवश्यकता है, तो सीबीआई जांच का आदेश दिया जा सकता है। पीठ ने यह भी कहा कि जांच एजेंसी स्वतंत्र रूप से काम करेगी और हाई कोर्ट की किसी भी टिप्पणी से प्रभावित नहीं होगी। इस टिप्पणी को न्यायिक प्रक्रिया की स्वतंत्रता और निष्पक्षता को मजबूत करने वाला माना जा रहा है।

यह पूरा मामला 45 हजार वितरण ट्रांसफॉर्मरों की खरीद में कथित अनियमितताओं से जुड़ा है, जो वर्ष 2021 से 2023 के बीच हुए बताए जा रहे हैं। आरोप है कि इस खरीद प्रक्रिया में राज्य सरकार को लगभग 397 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। यह मामला तब सामने आया जब सामाजिक संगठन Arappor Iyakkam ने इसमें कथित भ्रष्टाचार की जांच की मांग उठाई। संगठन ने विशेष जांच दल (SIT) से जांच कराने की अपील की थी, लेकिन बाद में मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच की दिशा बदलकर उच्च न्यायालय और फिर सीबीआई तक पहुंच गई।

इसके अलावा राजनीतिक स्तर पर भी इस मामले ने बड़ा रूप ले लिया है। विपक्षी दल All India Anna Dravida Munnetra Kazhagam के कानूनी प्रकोष्ठ के नेताओं ई. सरवनन और राजकुमार ने भी सीबीआई जांच की मांग का समर्थन किया था। उनका कहना था कि इतने बड़े वित्तीय घोटाले की जांच राज्य एजेंसी के बजाय केंद्रीय एजेंसी द्वारा की जानी चाहिए ताकि निष्पक्षता बनी रहे।

मद्रास हाई कोर्ट ने 29 अप्रैल को दिए अपने आदेश में कहा था कि मामले की गंभीरता को देखते हुए सीबीआई जांच आवश्यक है। कोर्ट ने यह भी माना था कि सरकारी खरीद प्रक्रिया में पारदर्शिता को लेकर कई सवाल उठे हैं, जिनका समाधान स्वतंत्र जांच से ही संभव है। इसी आदेश को अब सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई थी, लेकिन शीर्ष अदालत ने हस्तक्षेप से इनकार करते हुए हाई कोर्ट के आदेश को बरकरार रखा है।

असम में भाजपा युग का नया अध्याय, हिमंत की दूसरी शपथ के साथ एनडीए शक्ति प्रदर्शन की तैयारी

गुवाहाटी। पूर्वोत्तर की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी के बढ़ते प्रभाव के बीच मंगलवार का दिन असम के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। Himanta Biswa Sarma लगातार दूसरी बार असम के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं और इसके साथ ही राज्य में भाजपा नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन यानी National Democratic Alliance की लगातार तीसरी सरकार बनने जा रही है। यह केवल एक औपचारिक शपथ ग्रहण समारोह नहीं, बल्कि पूर्वोत्तर में भाजपा की राजनीतिक पकड़, संगठनात्मक मजबूती और राष्ट्रीय स्तर पर एनडीए के शक्ति प्रदर्शन का बड़ा मंच बनने जा रहा है।

गुवाहाटी के खानापारा स्थित पशु चिकित्सा महाविद्यालय मैदान में आयोजित होने वाला यह समारोह राष्ट्रीय राजनीति के लिहाज से भी खास माना जा रहा है। समारोह में प्रधानमंत्री Narendra Modi, केंद्रीय गृह मंत्री Amit Shah, रक्षा मंत्री Rajnath Singh, वित्त मंत्री Nirmala Sitharaman, केंद्रीय

मंत्री Sarbananda Sonowal समेत केंद्र सरकार के कई वरिष्ठ नेता शामिल होंगे। इसके अलावा भाजपा और एनडीए शासित राज्यों के 40 से अधिक मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री भी समारोह में मौजूद रह सकते हैं। इतनी बड़ी राजनीतिक उपस्थिति यह संकेत दे रही है कि भाजपा असम की जीत को केवल राज्य की सफलता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर अपनी राजनीतिक स्थिरता और विस्तार के प्रतीक के रूप में पेश करना चाहती है।

राज्यपाल Lakshman Prasad Acharya सुबह 11:40 बजे हिमंत बिस्व सरमा और उनके मंत्रिपरिषद के सदस्यों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाएंगे। माना जा रहा है कि इस बार की कैबिनेट में भाजपा के साथ-साथ सहयोगी दलों को भी प्रतिनिधित्व दिया जाएगा, ताकि गठबंधन संतुलन बनाए रखा जा सके। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि नई सरकार में क्षेत्रीय और सामाजिक समीकरणों को ध्यान में रखते हुए कई नए चेहरों को भी जगह मिल सकती है।

असम की राजनीति में यह क्षण इसलिए भी ऐतिहासिक माना जा रहा है क्योंकि हिमंत बिस्व सरमा राज्य के पहले ऐसे गैर-कांग्रेसी नेता बनने जा रहे हैं, जो लगातार दो कार्यकाल तक मुख्यमंत्री पद संभालेंगे। इससे पहले लंबे समय तक असम की राजनीति कांग्रेस के इर्द-गिर्द घूमती रही थी। लेकिन वर्ष 2016 में भाजपा ने Sarbananda Sonowal के नेतृत्व में पहली बार राज्य की सत्ता हासिल कर राजनीतिक समीकरण बदल दिए। इसके बाद 2021 में हिमंत बिस्व सरमा के नेतृत्व में भाजपा ने अपनी स्थिति और मजबूत की तथा अब लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी कर ली है। हालिया विधानसभा चुनाव में भाजपा नेतृत्व वाले गठबंधन ने बड़ी जीत दर्ज की। 126 सदस्यीय विधानसभा में एनडीए ने कुल 102 सीटें जीतकर विपक्ष को काफी पीछे छोड़ दिया। भाजपा ने अकेले 82 सीटों पर जीत दर्ज कर पहली बार राज्य में अपने दम पर पूर्ण बहुमत हासिल किया। सहयोगी दल Asom Gana Parishad और Bodoland People's Front ने भी 10-10 सीटें जीतकर गठबंधन को मजबूती दी। चुनाव परिणामों ने यह साफ कर दिया कि भाजपा अब केवल गठबंधन सहयोगियों के सहारे सत्ता में रहने वाली पार्टी नहीं, बल्कि असम की सबसे बड़ी और प्रभावशाली राजनीतिक ताकत बन चुकी है।

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि हिमंत बिस्व सरमा की व्यक्तिगत छवि, आक्रामक चुनावी रणनीति और प्रशासनिक फैसलों ने भाजपा को यह सफलता दिलाने में बड़ी भूमिका निभाई। पिछले कार्यकाल में सरकार ने बुनियादी ढांचे, निवेश, सड़क संपर्क, स्वास्थ्य और कानून-व्यवस्था के मुद्दों पर आक्रामक तरीके से काम किया। साथ ही अवैध घुसपैठ, भूमि अतिक्रमण और पहचान की राजनीति जैसे मुद्दों को भी भाजपा ने लगातार अपने एजेंडे में बनाए रखा। यही कारण है कि पार्टी को शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में व्यापक समर्थन मिला। नई सरकार के गठन के साथ ही अब सबकी नजर अगले पांच वर्षों की नीतियों और प्राथमिकताओं पर टिकी हुई है। माना जा रहा है कि शपथ ग्रहण समारोह के बाद मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा अपनी सरकार के पहले 100 दिनों का रोडमैप भी पेश कर सकते हैं। इसमें भूमि अधिकार, अतिक्रमण विरोधी अभियान, औद्योगिक निवेश, रोजगार, शिक्षा और पूर्वोत्तर में संपर्क व्यवस्था मजबूत करने जैसे मुद्दे शामिल हो सकते हैं। सरकार की प्राथमिकताओं में सीमावर्ती क्षेत्रों का विकास और जनजातीय इलाकों में योजनाओं का विस्तार भी अहम माना जा रहा है।

भाजपा नेतृत्व यह संदेश देने की कोशिश कर रहा है कि असम अब पूर्वोत्तर में उसकी राजनीतिक और प्रशासनिक रणनीति का केंद्र बन चुका है। पार्टी के लिए यह जीत इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पूर्वोत्तर लंबे समय तक क्षेत्रीय दलों और कांग्रेस का मजबूत गढ़ माना जाता था। लेकिन पिछले एक दशक में भाजपा ने यहां अपनी पकड़ तेजी से मजबूत की है। असम में लगातार तीसरी बार सरकार बनना उसी रणनीति की सबसे बड़ी सफलता माना जा रहा है।

खानापारा में होने वाला समारोह केवल सत्ता संभालने की औपचारिक प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि इसे भाजपा के राष्ट्रीय शक्ति प्रदर्शन के रूप में भी देखा जा रहा है। बड़ी संख्या में केंद्रीय नेताओं और राज्यों के मुख्यमंत्रियों की मौजूदगी यह संकेत दे रही है कि पार्टी असम मॉडल को राष्ट्रीय राजनीति में भी एक उदाहरण के रूप में पेश करना चाहती है। समारोह की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और सुरक्षा व्यवस्था भी बेहद कड़ी रखी गई है।

संपादकीय

चुनौतियों का ताज भी मिला है शुभेंदु को

यह भाजपा के लिए आह्लादित होने का वक्त है कि आजादी के बाद पहली बार बंगभूमि में उसकी सरकार बनी है। जिस धूमधाम व उल्लास संग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा व एनडीए के मुख्यमंत्रियों की मौजूदगी में पश्चिम बंगाल में शुभेंदु सरकार का शपथग्रहण समारोहपूर्वक संपन्न हुआ, उससे इसके महत्व का पता चलता है। भाजपा के लिए यह मौका इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि उसकी पूर्ववर्ती मातृ पार्टी जनसंघ के संस्थापक श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जन्मभूमि में सरकार बनाने का सपना पौन सदी बाद पूरा हुआ। दशकों तक वामपंथी दलों का गढ़ रहे बंगाल में दक्षिणपंथ का उदय एक विस्मयकारी घटना है। डेढ़ दशक से सत्ता में काबिज तृणमूल कांग्रेस को सत्ता से बेदखल करने में भाजपा ने साम-दाम-दंड-भेद के मुहावरे को हकीकत बनाया। कई दशकों के योजनाबद्ध अभियानों के बाद बंगाल में कमल खिला है। आक्रामक प्रचार तंत्र, मजबूत संगठन व संघ के वरदहस्त के चलते आज पश्चिम बंगाल भाजपामय हुआ है। यह पल इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि भाजपा ने कभी वामगढ़ रहे प्रदेश में अपनी यात्रा शून्य से शुरू की है। एक दशक में सुनियोजित अभियान से भाजपा का सत्ता पर काबिज होना भारतीय राजनीति की ऐतिहासिक घटना कही जा सकती है। अब उम्मीद की जानी चाहिए कि शुभेंदु विपक्ष में रहते दिखाए गए आक्रामक तेवरों को छोड़, प्रतिशोध की राजनीति में न उलझकर, इस परिवर्तन को सार्थक बनाएंगे। कुछ ऐसा करें कि देश में शुभेंदु विकास मॉडल की चर्चा हो। निस्संदेह, बंगाल में मिली बड़ी कामयाबी का श्रेय केंद्रीय नेतृत्व व पार्टी संगठन के साथ ही शुभेंदु अधिकारी को दिया जाना चाहिए, जिन्होंने सत्ता के दमन का सामना करते हुए न केवल संगठन को मजबूत बनाये रखा, बल्कि नंदीग्राम से लेकर भवानीपुर तक बंगाल की शेरनी कही जाने वाली ममता बनर्जी को सीधी लड़ाई में परास्त भी किया। वे पिछले पांच वर्ष से सड़क से विधानसभा तक में आक्रामक ढंग से टीएमसी का प्रतिरोध करते रहे। लेकिन अब जब उन्हें राज्य की बागडोर सौंपी गई है तो उम्मीद करें कि वे राज्य की कानून व अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाएंगे। उद्योग विरोधी नीतियों को दूर कर, राज्य में भारी निवेश को आमंत्रित करके बेरोजगारी संकट को दूर करने का प्रयास करेंगे। राज्य में कानून व्यवस्था, खासकर महिला सुरक्षा का बड़ा मुद्दा रहा है। आरजी कर मेडिकल कॉलेज की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बाद राज्यव्यापी आक्रोश पनपा था। संदेशखाली में महिलाओं से दुर्व्यवहार व हिंसा की घटनाएं लोगों को याद हैं। राष्ट्रवादी नीतियों को लेकर अगुवा रहने वाली भाजपा के लिए बांग्लादेश सीमा से घुसपैठ रोकना प्राथमिकता होगी, लेकिन इसका खमियाजा भारतीय नागरिकों को न भुगतना पड़े। उम्मीद की जानी चाहिए कि शुभेंदु सरकार राज्य में राजनीतिक व चुनावी हिंसा पर लगाम लगाने की ठोस पहल करेगी। साथ ही उन हिंसा करने वाले दबंग तत्वों पर लगाम लगाएगी, जो चोला बदलकर हर नई सरकार की छतरी के नीचे खड़े हो जाते हैं। जो कालांतर राज्य में अराजक राजनीतिक संस्कृति को जन्म देते हैं। कानून व्यवस्था सुधरने से ही पश्चिम बंगाल पटरी पर लौटेगा।

राजनीतिक विमर्श का जरिया बनी झालमुढ़ी वालों के फिरेंगे दिन

> विशेषकर बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में मुढ़ी या मुड़ी तैयार की जाती है। इसके लिए पहले धान को उबाला जाता है, फिर उसे सुखाकर जो चावल निकाला जाता है, उसे भूनने के बाद मुढ़ी या मुड़ी का रूप मिलता है। इस तरह से कह सकते हैं कि मुढ़ी या मुड़ी सेला चावल का भुना हुआ रूप है।

पश्चिम बंगाल के चुनाव नतीजे आ चुके हैं। शुभेंदु अधिकारी की अगुआई में राज्य में नई सरकार बन चुकी है। ममता बनर्जी की सरकार इतिहास के पन्नों में सिमट गई है। यूं तो हर चुनाव अभियान के साथ तमाम घटनाएं इतिहास में समाती रहती हैं। उनमें से कुछ का प्रभाव बरसों तक रहता है। पश्चिम बंगाल के हालिया विधानसभा चुनाव अभियान में एक घटना ऐसी घटी, जिसने ना सिर्फ पश्चिम बंगाल के वोटरों पर अमिट छाप छोड़ी, बल्कि बांग्ला खान-पान और संस्कृति से उन लोगों को भी परिचित करा दिया, जो उससे अब तक सर्वथा अपरिचित थे।पश्चिम बंगाल ही नहीं, पूर्वी उत्तर प्रदेश, समूचे बिहार, झारखंड और उड़ीसा में झालमुढ़ी खानपान का अभिन्न अंग है। झालमुढ़ी में दो शब्द हैं। पहला शब्द है झाल, जिसका मतलब होता है तीखा.. ऐसा तीखापन, जिसका असर सिर्फ जुबान पर ही नहीं महसूस हो, बल्कि जुबान की सिसियाहट के साथ नाक के रास्ते भी हल्की झलन का अहसास है। इस शब्द के मूल में है मुढ़ी, जिसे कहीं मुड़ी तो कहीं मुरमुरा तो कहीं मुर्ही कहा जाता है। इसमें प्याज, टमाटर, नमकीन, हरी मिर्च, सरसों तेल, नमक और भुना जीरा आदि डालकर जो मिश्रण तैयार किया जाता है, उसे झालमुढ़ी या झालमुड़ी कहा जाता है। इसी झालमुढ़ी को झारखंड से सटे पश्चिम बंगाल के झारग्राम जिले में 19 अप्रैल के दिन चुनाव प्रचार के बीच सड़क पर उतर कर मात्र दस रूपए में खरीदकर जब प्रधानमंत्री ने वहां मौजूद महिलाओं-बच्चों के साथ मिलकर खाया था। इसके साथ ही झालमुढ़ी इंटरनेट सर्च की दुनिया में पहले नंबर पर पहुंच गई। झालमुढ़ी में कई बार भुने हुए चने भी मिलाए जाते हैं तो कई बार भीगे हुए कच्चे चने तो कई बार उस चने से बनी घुघनी। जिन्हें घुघुनी के बारे में पता नहीं है, उनकी जानकारी के लिए बता दें कि भीगे हुए चने को जीरा, हरी मिर्च के सरसों तेल में छौंक लगाने के बाद सूखा और कई बार प्याज-टमाटर आदि मिलाकर मसालों को साथ भी पकाया जाता है। पश्चिम बंगाल ही क्यों, पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड में मुढ़ी को विशेषकर शाम की चाय के वक्त खाया जाता है। इन इलाकों के स्कूलों, कॉलेजों के बाहर, कचहरियों में स्टेशन के सामने झालमुढ़ी के ठेले और खोमचे खूब दिख जाएंगे।

विशेषकर बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल में मुढ़ी या मुड़ी तैयार की जाती है। इसके लिए पहले धान को उबाला जाता है, फिर उसे सुखाकर जो चावल निकाला जाता है, उसे भूनने के बाद मुढ़ी या मुड़ी का रूप मिलता है। इस तरह से कह सकते हैं कि मुढ़ी या मुड़ी सेला चावल का भुना हुआ रूप है। पश्चिम बंगाल और मिथिलांचल में तो मुढ़ी को पकौड़े के साथ भी खाया जाता है। पश्चिम बंगाल में तो इसे आलूचप के साथ विशेष रूप में पसंद किया जाता है। अब सवाल उठ सकता है कि आलूचप क्या होता है। दरअसल उबले आलू को मसलकर उसमें नमक, मसाले आदि मिलाकर उसकी टिक्की को बनाया जाता है। फिर उसे बेसन में डुबोकर छाना जाता है। इसे ही आलूचप कहा जाता है। वैसे आलूचप पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, उड़ीसा में खूब प्रचलित है। विशेषकर शाम की चाय के वक्त।

झालमुढ़ी का पश्चिम बंगाल की राजनीति से खास रिश्ता है। राजनीतिक, चुनावी आदि चर्चाओं में चाय के साथ सहज उपलब्ध झालमुढ़ी ही होती है। कई बार सिर्फ मुढ़ी भी खाया जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में शादी-विवाह मुंडन-जनेऊ के हल्दी और मंडप बनाने के दिन विशेषरूप से लोगों को सिर्फ मुढ़ी मिठाई या गुड़ के साथ नाश्ते में दी जाती है। बहुत कम लोग जानते हैं कि पश्चिम बंगाल के पिछले विधानसभा चुनाव नतीजों के बाद कोलकाता के एक मैदान पर ममता बनर्जी ने बाबुल सुप्रियो के संग झालमुढ़ी खाया था। इसके जरिए उन्होंने अपनी विजय, भाजपा से बेफिक्री और अपने लोगों को संदेश दिया था। उन्नीस अप्रैल को झारग्राम में झालमुढ़ी खरीदते वक्त पता नहीं प्रधानमंत्री मोदी को यह पता था कि नहीं, लेकिन उन्होंने इसके जरिए इतिहास रच दिया।

गांधी जी के बारे में कहा जाता है कि वे बड़े संचारक यानी कम्युनिकेटर थे। प्रधानमंत्री मोदी भी बड़े संचारक यानी कम्युनिकेटर हैं। मात्र दस रूपए की झालमुढ़ी के जरिए उन्होंने पश्चिम बंगाल के आम लोगों के दिलों तक जगह बना ली। उन्होंने अपनी पार्टी का संदेश सीधे हर घर तक पहुंचा दिया। जिन इलाकों में झालमुढ़ी खाई जाती है, उन इलाकों में देखेंगे तो हर राजनीतिक सम्मेलन, रैली आदि के दौरान बाहर इसके ठेले और खोमचे लगे होते हैं। कई बार नेताओं के इंतजार में वक्त काटने तो कई बार तात्कालिक भूख मिटाने का जरिया यह झालमुढ़ी ही होती है। स्कूलों, कॉलेजों और कचहरियों के आसपास झालमुढ़ी और चने-चबेने के खोमचे और ठेले आपको पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बहुतायत से मिल जाएंगे। हाट-बाजार में भी शाम की चाय के वक्त का इन इलाकों का सबसे आसानी से सस्ते में उपलब्ध और पसंदीदा स्नैक यह झालमुढ़ी ही है। झालमुढ़ी आम लोगों और आम दुकानदारों से जुड़ने का भी सबसे बड़ा जरिया है। शायद यही वजह है कि प्रधानमंत्री ने झारग्राम में सड़क किनारे की झालमुढ़ी की दुकान को चुना और महज दस रूपए की झालमुढ़ी के ठोंगे यानी लिफाफे के जरिए पश्चिम बंगाल के करोड़ों दिलों तक जगह बना ली। प्रधानमंत्री मोदी ने आत्मनिर्भर भारत और वोकल फॉर लोकल का नारा दिया है। झालमुढ़ी उनके इन दोनों नारों का भी प्रतिनिधित्व करता है। झालमुढ़ी और उसमें शामिल किए जाने तत्वों को स्थानीय स्तर पर ही तैयार किया जाता है, स्थानीय लोगों में यह सर्वाधिक लोकप्रिय है और इसके जरिए स्थानीय स्तर पर एक पूरी श्रृंखला की रोजी-रोटी चलती है। इसलिए यह आत्मनिर्भर भारत का भी प्रतीक है। चूंकि इसे खरीदने और खाने से स्थानीय रोजगार और पैदावार को सहयोग मिलता है, इसलिए यह वोकल फॉर लोकल के भी नजदीक है।

पश्चिम बंगाल में अब सरकार बन चुकी है। सरकार बनने और जीत हासिल करने के बाद बीजेपी और उसके नेताओं ने झालमुढ़ी की पार्टियां की हैं। उम्मीद की जानी चाहिए कि आने वाले दिनों में पश्चिम बंगाल की सरकार राजनीतिक विमर्श का जरिया बनी झालमुढ़ी और उस पर निर्भर लोगों की भलाई की दिशा में जरूर कदम उठाएगी।

प्रेरणा

क्रांति की राह पर अडिग संकल्प : चंद्रशेखर आज़ाद की अद्भुत राष्ट्रभक्ति

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास वीरता, त्याग और अदम्य साहस की अनगिनत गाथाओं से भरा हुआ है। इस इतिहास में Chandra Shekhar Azad का नाम एक ऐसे योद्धा के रूप में दर्ज है, जिसने अपना पूरा जीवन मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया। उनका व्यक्तित्व केवल एक क्रांतिकारी तक सीमित नहीं था, बल्कि वे साहस, बुद्धिमत्ता, दूरदृष्टि और राष्ट्रप्रेम के अद्वितीय प्रतीक थे। वे जानते थे कि देश की गुलामी केवल राजनीतिक बंधन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान पर लगा हुआ सबसे बड़ा कलंक है। इसलिए उन्होंने बहुत कम आयु में यह संकल्प ले लिया था कि वे अपने जीवन का प्रत्येक क्षण भारत माता को स्वतंत्र कराने में लगाएंगे।

उन दिनों देशभर में अंग्रेजों के खिलाफ असंतोष बढ़ता जा रहा था। युवा वर्ग में क्रांति की भावना तेजी से फैल रही थी। अनेक गुप्त संगठन अंग्रेजी शासन को चुनौती देने के लिए कार्य कर रहे थे। लेकिन इन संगठनों के सामने सबसे बड़ी समस्या धन और संसाधनों की थी। हथियारों की व्यवस्था करना, संदेश पहुंचाना, साथियों को सुरक्षित रखना और योजनाओं को क्रियान्वित करना आसान नहीं था। ऐसे समय में प्रत्येक क्रांतिकारी अपने स्तर पर संगठन को मजबूत करने के लिए नए-नए उपाय सोचता रहता था। इन्हीं क्रांतिकारियों में Ramakrishna Khatri भी सक्रिय रूप से कार्य कर रहे थे।

एक दिन गाज़ीपुर के एक महंत, जो वृद्ध और अस्वस्थ थे, उन्होंने रामकृष्ण खत्री से इच्छा व्यक्त की कि यदि उनकी नजर में कोई सुशील, सच्चरित्र और योग्य युवक हो तो उसे उनके पास भेजा जाए। वे चाहते थे कि वह युवक उनका शिष्य बने और आगे चलकर मठ की सारी जिम्मेदारियां संभाले। यह बात सामान्य रूप से सुनने में साधारण लग सकती थी, लेकिन क्रांतिकारियों के लिए यह अवसर अलग महत्व रखता था। मठ में पर्याप्त संपत्ति और साधन थे, जो किसी भी संगठन को आर्थिक रूप से मजबूत बना सकते थे। जब इस विषय पर क्रांतिकारियों के बीच चर्चा हुई तो चंद्रशेखर आज़ाद ने स्वयं इस जिम्मेदारी को स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त की।

खत्री जी यह सुनकर हैरान रह गए। उन्होंने आज़ाद से कहा कि यह कोई आसान कार्य नहीं है। साधु बनने के लिए सिर मुंडवाना पड़ेगा, दीक्षा लेनी होगी, दिन-रात मठ में रहना पड़ेगा और पूरी निष्ठा से सेवा करनी होगी। एक स्वतंत्र स्वभाव वाले क्रांतिकारी के लिए ऐसा जीवन अत्यंत कठिन माना जाता था। लेकिन आज़ाद के चेहरे पर कोई चिंता या असमंजस नहीं था। उन्होंने बड़े शांत और दृढ़ स्वर में कहा कि यदि इससे पार्टी को आर्थिक सहायता मिल सकती है और संगठन मजबूत हो सकता है, तो वे यह सब करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि पार्टी के पास पर्याप्त धन होगा तो क्रांतिकारी आंदोलन को नई शक्ति मिलेगी और देश जल्दी स्वतंत्र हो सकेगा।

चंद्रशेखर आज़ाद की यह सोच उनके असाधारण व्यक्तित्व को उजागर करती है। वे केवल हथियार उठाने वाले योद्धा नहीं थे, बल्कि एक दूरदर्शी रणनीतिकार भी थे। वे समझते थे कि केवल भावनाओं से कोई आंदोलन सफल नहीं होता। उसके लिए संगठन, संसाधन और योजनाबद्ध प्रयास आवश्यक होते हैं। इसलिए उन्होंने व्यक्तिगत इच्छाओं और सुख-सुविधाओं को कभी महत्व नहीं दिया। उनके लिए राष्ट्रहित ही सर्वोपरि था। यह वही भावना थी जिसने उन्हें बाकी लोगों से अलग बनाया। वे हर परिस्थिति में केवल यह सोचते थे कि किस प्रकार देश की आज़ादी के संघर्ष को और अधिक प्रभावी बनाया जाए।

जब रामकृष्ण खत्री ने उनसे पूछा कि उनका परिचय किस रूप में कराया जाए, तब आज़ाद ने सहजता से कहा कि उन्हें किसी कवि के रूप में प्रस्तुत कर दिया जाए। यह सुनकर खत्री जी मुस्कुरा पड़े और उन्होंने मजाक में पूछा कि यदि महंत जी कविता सुनाने के लिए कह देंगे तो क्या होगा? इस पर आज़ाद ने जो उत्तर दिया, वह उनके विचारों की गहराई और उनकी बौद्धिक चेतना को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि यदि देश की स्वतंत्रता के लिए वे क्रांतिकारी बन सकते हैं, तो कवि भी बन सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्यकार होकर क्या खत्री जी यह नहीं जानते कि कलम तलवार से भी अधिक शक्तिशाली शस्त्र होती है।

आज़ाद का यह कथन अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह बताता है कि वे केवल शारीरिक संघर्ष में ही विश्वास नहीं रखते थे, बल्कि विचारों और साहित्य की शक्ति को भी समझते थे। इतिहास इस बात का साक्षी है कि कई बार लेखनी ने वह कार्य कर दिखाया है, जो तलवारें नहीं कर सकीं। कवियों, लेखकों और चिंतकों ने अपने शब्दों के माध्यम से जनमानस में स्वतंत्रता की चेतना जगाई। आज़ाद यह भलीभांति जानते थे कि क्रांति केवल गोलियों और बमों से नहीं आती, बल्कि विचारों की आग से भी समाज बदलता है। यही कारण था कि वे साहित्य और क्रांति दोनों को समान महत्व देते थे।

चंद्रशेखर आज़ाद का जीवन त्याग और संकल्प का जीवंत उदाहरण है। उन्होंने कभी अपने लिए सम्मान, पद या सुख की कामना नहीं की। उनका एकमात्र उद्देश्य देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना था। वे जानते थे कि उनका मार्ग कठिन है और हर कदम पर मृत्यु उनका इंतजार कर रही है, लेकिन फिर भी उन्होंने कभी भय को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। उनका आत्मविश्वास इतना प्रबल था कि अंग्रेज सरकार भी उनसे भयभीत रहती थी। वे हमेशा कहते थे कि वे आज़ाद हैं और आज़ाद ही रहेंगे। उन्होंने अपने इस वचन को अंतिम क्षण तक निभाया।

इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में जब अंग्रेजों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया, तब भी उन्होंने हार नहीं मानी। वे अंत तक लड़ते रहे और जब उन्हें लगा कि अब वे जीवित पकड़े जा सकते हैं, तब उन्होंने अपनी अंतिम गोली स्वयं को मार दी। यह केवल आत्मबलिदान नहीं था, बल्कि अपने संकल्प के प्रति अंतिम निष्ठा थी। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि सच्चा क्रांतिकारी अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं करता।

आज स्वतंत्र भारत में जब हम खुली हवा में सांस लेते हैं, तब हमें उन वीरों को कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने अपनी जवानी और अपना जीवन देश के लिए न्योछावर कर दिया। चंद्रशेखर आज़ाद का जीवन हमें सिखाता है कि राष्ट्रप्रेम केवल नारों से नहीं, बल्कि त्याग, अनुशासन और कर्म से सिद्ध होता है। उनका साहस, उनकी दूरदृष्टि और उनका अटूट संकल्प आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा का अमर स्रोत है। वे केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और राष्ट्रभक्ति की जीवित प्रतीक थे, जिनकी गाथा सदियों तक भारतीयों के हृदय में अमर रहेगी।

सोना खरीदने से क्यों मना कर रहे हैं मोदी? क्या फिर से होने वाला है Work From Home? पेट्रोल-डीजल के दाम कबसे बढ़ेंगे?

पश्चिम एशिया में जारी अमेरिका ईरान तनाव का असर अब भारत की अर्थव्यवस्था और आम लोगों की जिंदगी पर साफ दिखाई देने लगा है। कच्चे तेल की कीमतों में लगातार हो रही तेजी, रुपये पर बढ़ता दबाव और विदेशी मुद्रा भंडार को लेकर गहराती चिंता के बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से बचत करने की अपील की है। हैदराबाद में एक जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने लोगों से एक वर्ष तक सोना खरीदने से बचने, विदेश यात्राएं टालने और जहां संभव हो वहां घर से काम करने जैसे उपाय अपनाने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के कारण वैश्विक आपूर्ति व्यवस्था प्रभावित हुई है और होरमुज जलडमरूमध्य में बाधा आने से तेल की आपूर्ति को लेकर गंभीर संकट पैदा हो गया है। हम आपको बता दें कि यह समुद्री मार्ग दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण तेल परिवहन मार्गों में गिना जाता है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा ईरान के शांति प्रस्ताव को ठुकराए जाने के बाद कच्चे तेल की कीमतें एक सौ पांच डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुंच गईं, जिससे पूरी दुनिया में महंगाई और ऊर्जा सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है।

भारत अपनी जरूरत का लगभग 88 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में तेजी का सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। रुपये में कमजोरी आई है और आयात बिल लगातार बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कोरोना काल के दौरान देश ने घर से काम, वर्चुअल बैठकों और वीडियो संवाद जैसी व्यवस्थाओं को अपनाया था। अब समय आ गया है कि इन तरीकों को फिर से व्यापक रूप से अपनाया जाए ताकि ईंधन की खपत कम हो और विदेशी मुद्रा की बचत हो सके।

उन्होंने लोगों से मेट्रो रेल का अधिक उपयोग करने, कार पूल जैसी शेयरिंग व्यवस्था अपनाने और बिजली से चलने वाले वाहनों को प्राथमिकता देने की अपील की। साथ ही माल परिवहन को सड़कों की बजाय रेलमार्ग की ओर ले जाने की बात भी कही ताकि डीजल पर निर्भरता घटाई जा सके। हम आपको बता दें कि पश्चिम एशिया संकट के बाद भारत का ईंधन आयात खर्च तेजी से बढ़ा है और यदि होरमुज जलडमरूमध्य में बाधा लंबे समय तक बनी रही तो तेल की ऊंची कीमतें कई महीनों तक बनी रह सकती हैं।

प्रधानमंत्री की सबसे अधिक चर्चा में रही अपील सोने की खरीद को लेकर थी। उन्होंने कहा कि देशहित में नागरिकों को कम से कम एक वर्ष तक सोना खरीदने से बचना चाहिए। हम आपको बता दें कि भारत दुनिया के सबसे बड़े सोना आयातकों में शामिल है और विवाह तथा त्योहारों के मौसम में इसकी मांग बहुत बढ़ जाती है। चूंकि सोना मुख्य रूप से विदेशों से आयात किया जाता है, इसलिए इसकी अधिक खरीद से डॉलर बाहर भेजना पड़ता है और भारत के घरेलू विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव पड़ता है। अर्थशास्त्रियों के अनुसार भारत के लिए कच्चे तेल और सोने में एक समानता है। दोनों का बड़ा हिस्सा विदेशों से खरीदा जाता है और भुगतान अमेरिकी डॉलर में किया जाता है। जब तेल महंगा होता है और साथ ही सोने की मांग भी बढ़ जाती है, तब देश को आयात के लिए अधिक डॉलर खर्च करने पड़ते हैं। इससे चालू खाते का घाटा बढ़ता है और रुपये पर दबाव आता है। यही कारण है कि आर्थिक संकट के समय सरकारें अक्सर सोने के आयात को नियंत्रित करने के उपाय करती रही हैं। अतीत में भी आयात शुल्क बढ़ाने, आयात पर रोक लगाने और वैकल्पिक योजनाओं को बढ़ावा देने जैसे कदम उठाए जा चुके हैं।

प्रधानमंत्री ने लोगों से अनावश्यक विदेश यात्राएं, विदेशी पर्यटन और विदेशों में आयोजित होने वाले विवाह समारोह भी एक वर्ष तक टालने का आग्रह किया। उनका कहना था कि मध्यम वर्ग में विदेश घूमने और विदेश में विवाह करने का चलन तेजी से बढ़ा है, लेकिन मौजूदा वैश्विक संकट के समय विदेशी मुद्रा बचाना राष्ट्रीय आवश्यकता बन गया है।

इस बीच, अमेरिका ईरान युद्ध का असर वैश्विक सोना बाजार पर भी दिखाई दे रहा है। आम तौर पर युद्ध और भू-राजनीतिक तनाव के समय निवेशक सोने को सुरक्षित निवेश मानते हैं, जिससे इसकी कीमतें बढ़ती हैं। लेकिन इस बार स्थिति जटिल है क्योंकि तेल की कीमतों में उछाल से महंगाई और ब्याज दरों के लंबे समय तक ऊंचे बने रहने की आशंका बढ़ गई है। ऊंची ब्याज दरों के कारण निवेशक सोने की बजाय ब्याज देने वाले निवेश विकल्पों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। इसी कारण युद्ध की अनिश्चितता के बावजूद अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोने की कीमतों में उतार-चढ़ाव बना हुआ है। हम आपको यह भी बता दें कि प्रधानमंत्री ने केवल ईंधन और सोने तक ही अपनी अपील सीमित नहीं रखी। उन्होंने खाद्य तेल की खपत घटाने, रासायनिक उर्वरकों के उपयोग को कम करने और प्राकृतिक खेती तथा स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने की भी बात कही। उनका कहना था कि किसी भी तरह विदेशी मुद्रा की बचत करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में हर नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण है।

हालांकि विपक्ष ने प्रधानमंत्री की इस अपील पर सवाल भी उठाए हैं। कांग्रेस ने कहा है कि सरकार ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने में विफल रही है और अब आम लोगों पर बोझ डाल रही है। दूसरी ओर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने प्रधानमंत्री की अपील को दूरदर्शी कदम बताते हुए कहा कि इससे भारत ऊर्जा के क्षेत्र में अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बन सकेगा।

उधर, विशेषज्ञों का मानना है कि प्रधानमंत्री का संदेश केवल सोना या ईंधन बचाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश को संभावित वैश्विक आर्थिक संकट के लिए तैयार करने का संकेत भी है। यदि तेल की कीमतें लंबे समय तक ऊंची बनी रहीं और सोने का आयात भी बढ़ता रहा, तो महंगाई, आयात बिल और रुपये पर दबाव और अधिक बढ़ सकता है। ऐसे में सरकार नागरिकों से संयम, बचत और स्वदेशी सोच अपनाने की अपील कर रही है ताकि वैश्विक संकट के बीच भारत की आर्थिक स्थिरता बनी रहे।

अभियान

कर्म, न्याय और तपस्या के अद्वितीय देवता : शनिदेव की दिव्य महिमा

सनातन धर्म में देवताओं की उपासना केवल भय या आस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह मनुष्य को उसके कर्म, धर्म और जीवन के वास्तविक उद्देश्य का बोध कराने का माध्यम भी है। इन्हीं देवताओं में Shani Dev का स्थान अत्यंत विशिष्ट और प्रभावशाली माना जाता है। शनिदेव को कर्मफलदाता, न्यायाधीश और दंडाधिकारी के रूप में पूजा जाता है। वे ऐसे देवता हैं जो मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार फल प्रदान करते हैं। यदि कोई व्यक्ति सत्कर्म करता है, सत्य और धर्म के मार्ग पर चलता है, तो शनिदेव उसे सुख, समृद्धि और सम्मान प्रदान करते हैं। वहीं, जो लोग अधर्म, छल, कपट और अन्याय का मार्ग अपनाते हैं, उन्हें शनिदेव अपने कठोर दंड द्वारा चेतावनी देते हैं। यही कारण है कि हिंदू धर्म में शनिदेव के प्रति श्रद्धा के साथ-साथ गहरी गंभीरता भी दिखाई देती है।

पौराणिक ग्रंथों में शनिदेव के स्वरूप का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन मिलता है। उनका शरीर इन्द्रनीलमणि के समान श्याम वर्ण का बताया गया है। वे सिर पर मणियों से जड़ा स्वर्ण मुकुट धारण करते हैं, गले में दिव्य मालाएं पहनते हैं और नीले रंग के वस्त्रों से अलंकृत रहते हैं। उनका मुख्य वाहन कौआ माना जाता है, जो सतर्कता और न्याय का प्रतीक है। हाथों में धनुष, बाण और त्रिशूल धारण करने वाले शनिदेव वरमुद्रा में भक्तों को आशीर्वाद देते हैं। उनका यह स्वरूप केवल भय उत्पन्न करने वाला नहीं, बल्कि यह संकेत देता है कि न्याय हमेशा सजग और निष्पक्ष होता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार, शनिदेव का जन्म ज्येष्ठ अमावस्या के दिन हुआ था। वे भगवान Surya और छाया देवी की संतान हैं। कथा के अनुसार, सूर्यदेव का विवाह प्रजापति दक्ष की पुत्री संज्ञा से हुआ था। संज्ञा देवी अत्यंत पतिव्रता थीं, किंतु सूर्यदेव के असहनीय तेज के कारण वे लंबे समय तक उनके समीप नहीं रह सकीं। उन्होंने अपनी छाया को सूर्यदेव की सेवा में छोड़ दिया और स्वयं तपस्या के लिए चली गईं। कुछ समय बाद सूर्यदेव और छाया देवी से शनिदेव का जन्म हुआ। कहा जाता है कि जन्म से ही उनका शरीर श्याम वर्ण का था, उनकी आंखें बड़ी और व्यक्तित्व अत्यंत गंभीर था।

शनिदेव के जन्म से जुड़ी कथा केवल एक पौराणिक प्रसंग नहीं है, बल्कि यह इस बात का प्रतीक भी है कि तप, सहनशीलता और कठिन परिस्थितियों में जन्म लेने वाला व्यक्ति आगे चलकर महान शक्ति का स्वामी बन सकता है। शनिदेव का श्याम वर्ण भी एक गहरे आध्यात्मिक अर्थ को प्रकट करता है। यह दर्शाता है कि बाहरी रूप से अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति का कर्म और उसका चरित्र होता है। धार्मिक ग्रंथों में शनिदेव की वक्र दृष्टि का भी विशेष उल्लेख मिलता है। सामान्यतः लोग उनकी दृष्टि से भयभीत रहते हैं, किंतु इसके पीछे भी एक मार्मिक कथा जुड़ी हुई है। ब्रह्मपुराण के अनुसार, शनिदेव बचपन से ही भगवान Krishna के परम भक्त थे। वे हर समय श्रीकृष्ण के ध्यान और भक्ति में लीन रहते थे। जब वे युवा हुए तो उनके पिता सूर्यदेव ने उनका विवाह चित्ररथ की कन्या से कर दिया। उनकी पत्नी अत्यंत सती, साध्वी और तेजस्विनी थीं। एक दिन जब उनकी पत्नी ऋतु स्नान के पश्चात पुत्र प्राप्ति की इच्छा लेकर उनके पास पहुंचीं, तब शनिदेव भगवान कृष्ण के ध्यान में इतने लीन थे कि उन्हें बाहरी संसार का कोई भान ही नहीं रहा। उनकी पत्नी लंबे समय तक प्रतीक्षा करती रहीं, किंतु शनिदेव ध्यान से बाहर नहीं आए। परिणामस्वरूप उनका ऋतुकाल व्यर्थ चला गया।

इससे दुखी होकर उनकी पत्नी ने क्रोध में शनिदेव को शाप दे दिया कि जिसकी ओर भी वे दृष्टि डालेंगे, उसका अनिष्ट हो जाएगा। बाद में जब शनिदेव को इस घटना का ज्ञान हुआ, तब उन्होंने अपनी पत्नी को शांत किया। पत्नी को भी अपनी भूल का पश्चाताप हुआ, लेकिन शाप वापस लेने की शक्ति उनमें नहीं थी। तभी से शनिदेव ने अपना सिर झुकाकर रखना आरंभ कर दिया ताकि उनकी दृष्टि से किसी का अहित न हो। यह कथा केवल शाप की कहानी नहीं है, बल्कि यह मनुष्य को यह शिक्षा भी देती है कि क्रोध में बोले गए शब्द जीवनभर का प्रभाव छोड़ सकते हैं।

ज्योतिष शास्त्र में शनिदेव को अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रह माना गया है। नवग्रहों में उनका सातवां स्थान है। वे मकर और कुंभ राशि के स्वामी माने जाते हैं। ज्योतिष के अनुसार, शनिदेव एक राशि में लगभग ढाई वर्ष तक रहते हैं और उनकी महादशा उन्नीस वर्षों तक चलती है। यही कारण है कि शनि की साढ़ेसाती और ढैया को विशेष महत्व दिया जाता है। लोग सामान्यतः शनि की दशा से भयभीत रहते हैं, लेकिन ज्योतिष शास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि शनि केवल बुरे कर्मों का दंड देते हैं। जो व्यक्ति सत्य, न्याय, परिश्रम और ईमानदारी का पालन करता है, उसे शनिदेव कभी कष्ट नहीं देते। बल्कि ऐसे लोगों को वे उन्नति, वैभव और सफलता प्रदान करते हैं।

शनिदेव की सबसे बड़ी विशेषता उनकी निष्पक्षता है। वे किसी के साथ पक्षपात नहीं करते। राजा हो या साधारण व्यक्ति, यदि उसके कर्म गलत हैं तो शनिदेव उसे दंड अवश्य देते हैं। इसी कारण उन्हें कर्मफलदाता और न्यायाधीश कहा जाता है। वे यह संदेश देते हैं कि संसार में कोई भी व्यक्ति अपने कर्मों के परिणाम से बच नहीं सकता। मनुष्य जैसा कर्म करता है, वैसा ही फल उसे प्राप्त होता है। एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार, जब शनिदेव को यह ज्ञात हुआ कि उनके श्याम वर्ण का कारण उनके पिता सूर्यदेव का तेज है, तब वे भीतर से आहत हो गए। उन्होंने कठोर तपस्या कर भगवान Shiva को प्रसन्न किया। उनकी तपस्या इतनी कठिन थी कि उनका शरीर तक जल गया। भगवान शिव उनकी भक्ति और तप से अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्हें वरदान मांगने को कहा। तब शनिदेव ने ऐसा वरदान मांगा जिससे वे अपने पिता से भी अधिक पूजनीय बन सकें और संसार में न्याय स्थापित कर सकें। भगवान शिव ने उन्हें वरदान दिया कि वे नवग्रहों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेंगे और पृथ्वी पर न्यायाधीश के रूप में पूजे जाएंगे। तभी से शनिदेव को कर्मों के न्यायाधीश के रूप में सम्मान प्राप्त हुआ।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, शनिदेव की उपासना केवल भय से नहीं करनी चाहिए, बल्कि आत्मशुद्धि और सत्कर्म के संकल्प के साथ करनी चाहिए। शनिदेव उन लोगों से विशेष प्रसन्न होते हैं जो गरीबों, असहायों और श्रमिकों की सहायता करते हैं। सेवा, दान, सत्य और परिश्रम को शनि कृपा प्राप्त करने का सबसे बड़ा माध्यम माना गया है। शनिदेव यह सिखाते हैं कि जीवन में सफलता पाने के लिए केवल भाग्य नहीं, बल्कि कर्म और अनुशासन भी आवश्यक हैं।

आज के आधुनिक युग में भी शनिदेव की महिमा और उनके प्रति लोगों की आस्था कम नहीं हुई है। देशभर में शनिदेव के मंदिरों में लाखों श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते हैं। विशेष रूप से शनिवार का दिन उनकी पूजा के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। लोग तेल चढ़ाते हैं, पीपल के वृक्ष की पूजा करते हैं और अपने पापों से मुक्ति की प्रार्थना करते हैं। लेकिन वास्तविक अर्थों में शनिदेव की कृपा तभी प्राप्त होती है जब मनुष्य अपने जीवन में सत्य, न्याय और सदाचार को अपनाता है।

शनिदेव का संपूर्ण स्वरूप मनुष्य को यह संदेश देता है कि ईश्वर के न्याय से कोई बच नहीं सकता। वे सिखाते हैं कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयां क्यों न आएं, मनुष्य को अपने कर्मों की पवित्रता बनाए रखनी चाहिए। उनका कठोर स्वरूप वास्तव में मनुष्य को सही मार्ग पर चलाने का माध्यम है। इसीलिए सनातन धर्म में शनिदेव को केवल दंडदाता नहीं, बल्कि धर्म और न्याय की रक्षा करने वाले महान देवता के रूप में पूजा जाता है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

सोमनाथ अमृत पर्व - 2026

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सोमनाथ अमृत पर्व में सहभागी होकर जनसभा को भावपूर्ण संबोधित किया

▸▸ भारत की सांस्कृतिक विरासत सोमनाथ मंदिर का स्वतंत्रता के बाद पुनर्निर्माण स्वतंत्र भारत की चेतना का उद्घोष था : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

▸▸ सोमनाथ अमृत पर्व के उपलक्ष्य में प्रधानमंत्री ने सोमनाथ विरासत के डाक टिकट तथा 75 रुपए मूल्य के सिक्के का अनावरण किया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▸▸ भगवान सोमनाथ का मंदिर सदियों से देश की आस्था, संस्कृति, अडिग संकल्प एवं पुनर्जागरण का जीवंत प्रतीक है

▸▸ भगवान सोमनाथ का दिव्य मंदिर विध्वंस से पुनर्निर्माण के सरदार साहब के दृढ़संकल्प तथा राष्ट्र के आत्मसम्मान का प्रतीक बना हुआ है

▸▸ प्रधानमंत्री ने देशवासियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं सनातन हिंदू संस्कृति के पुनर्जागरण का भाव प्रबल बनाया है

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

▸▸ सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र लंबे समय तक मजबूत तभी रह सकता है, जब वह अपनी जड़ से जुड़ा हुआ रहे

▸▸ सोमनाथ अमृत महोत्सव आने वाले एक हजार वर्ष के लिए भारत की प्रेरणा है

▸▸ तीर्थस्थलों का विकास भारत की आर्थिक प्रगति से जुड़ा हुआ है

▸▸ सोमनाथ सहित सांस्कृतिक विरासतों के जतन तथा हजारों वर्ष की इस परंपरा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी नई पीढ़ी को सौंपें

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को सोमनाथ में कहा कि 'सोमनाथ अमृत महोत्सव' केवल अतीत का उत्सव नहीं, अपितु आने वाले 1000 वर्ष तक भारत की प्रेरणा का महोत्सव है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के 75 वर्ष के उत्सव के अवसर पर आयोजित 'सोमनाथ अमृत पर्व - 2026' में सहभागी हुए।

इस अवसर पर सद्भावना मैदान में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सृष्टि का जिससे सृजन होता है और जिसमें सृष्टि लय होती है, आज हम उसके धाम के पुनर्निर्माण का उत्सव मना रहे हैं। हलाहल विष का पानकर जो नीलकंठ कहलाए, आज हम उनकी शरण में सोमनाथ अमृत महोत्सव मना रहे हैं। यह भगवान सदाशिव की ही लीला है।

उन्होंने कहा कि 75 वर्ष पहले आज के दिन हुई सोमनाथ की पुनर्स्थापना साधारण अवसर नहीं था। 1947 में देश स्वतंत्रत हुआ, परंतु 1951 में सोमनाथ मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा भारत की स्वतंत्र चेतना का उद्घोष था। सरदार वल्लभभाई पटेल ने 500 से अधिक रजवाड़ों का एकीकरण कर आधुनिक भारत का स्वरूप दिया और सोमनाथ धाम का पुनर्निर्माण करवा कर उन्होंने दुनिया को बताया कि भारत केवल स्वतंत्र नहीं हुआ है, बल्कि प्राचीन गौरव को पुनः प्राप्त करने के मार्ग पर भी आगे बढ़ चुका है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज 75 वर्ष के उत्सव के अवसर पर देखने को मिल रहा है कि सोमनाथ मंदिर ने विनाश में सृजन का संकल्प चरितार्थ किया है। प्रभास क्षेत्र ने असत पर सत की विजय बार-बार की है। मंदिर पुनर्निर्माण की हजारों वर्षों की यह आध्यात्मिक चेतना विश्व को मानव मात्र के कल्याण की सीख दे रही है। सोमनाथ का अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि जिनके नाम में ही सोम यानी अमृत है, उसे कौन नष्ट कर सकता है। यह भारत का ऐसा अविनाशी स्वरूप है, जिसे सदियों के कुत्सित प्रयास हटा-मिटा नहीं सके हैं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ अमृत महोत्सव केवल अतीत का उत्सव नहीं, बल्कि आगामी 1000 वर्ष तक भारत की प्रेरणा का महोत्सव बना रहेगा।

पोखरण परमाणु परीक्षण तथा ऑपरेशन शिव-शक्ति का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि 11 मई, 1998 को पोखरण में परमाणु परीक्षण कर भारत के वैज्ञानिकों ने देश के सामर्थ्य एवं क्षमता को दुनिया के समक्ष उजागर किया था। उस समय दुनियाभर की शक्तियाँ भारत को हराने के लिए मैदान में उतरी थीं और अनेक आर्थिक प्रतिबंध लगाए गए थे, लेकिन उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री अटलजी के नेतृत्व में भारत देश झुका नहीं था और उसने दुनिया को बताया था कि भारतीय अलग मिट्टी के बने हुए हैं। 11 मई, 1998 के बाद 13 मई को भारत ने फिर से दो परमाणु परीक्षण किए, तब दुनिया को समझ में आ चुका था कि भारत की राजशक्ति कितनी अटल है। अटलजी के नेतृत्व में भारत ने बताया कि दुनिया की कोई शक्ति भारत को झुका या दबा नहीं सकती।

उन्होंने कहा कि इस परमाणु परीक्षण को ऑपरेशन शक्ति नाम दिया गया था। शिव के साथ शक्ति की आराधना हमारी परंपरा है। देश में चंद्रयान मिशन के समय जहाँ रोवर लैंड हुआ, वहाँ उसे हमने शिवशक्ति पॉइंट नाम दिया।

इस अवसर पर उन्होंने ऑपरेशन शक्ति की वर्षगाँठ की शुभकामनाएँ दीं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सोमनाथ मंदिर के निर्माण के 75 वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित अमृत पर्व के अवसर पर हजारों लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि 1947 में देश के स्वतंत्र होने के बाद 1951 में भारत की सांस्कृतिक विरासत सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण स्वतंत्र भारत की चेतना का उद्घोष था। उन्होंने गौरवपूर्वक कहा कि सोमनाथ हमें याद दिलाता है कि कोई भी राष्ट्र लंबे समय तक तभी मजबूत रह सकता है, जब वह उसकी जड़ के साथ जुड़ा हुआ रहे। सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ और देश ने सदियों के कलंक को धो डाला। उन्होंने संकल्प भी व्यक्त किया कि सोमनाथ दादा के आशीर्वाद से 75 वर्ष की इस यात्रा को नई ऊंचाई देनी है।

प्रधानमंत्री ने भारत की सांस्कृतिक विरासतों को गौरवशाली बताकर भारत की सांस्कृतिक एकता एवं सांस्कृतिक वैभव को उजागर करते हुए कहा कि इस सांस्कृतिक गौरव यात्रा को जब अनेक वीर सपूतों तथा राजा-महाराजाओं ने संरक्षित किया है, तब नई पीढ़ी को जिम्मेदारी के साथ इन विरासतों की महानता तथा भव्यता के संरक्षण से जागृत करना है और यह महान विरासत सौंपनी है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ पर आक्रमण करने वाले सोमनाथ को केवल एक भौतिक ढांचा मानते थे, जितनी बार सोमनाथ पर आक्रमण हुआ, उतनी बार सोमनाथ का और अधिक दिव्यता से पुनर्निर्माण होता गया। उन्होंने कहा कि ये आक्रांता भारत के वैचारिक सामर्थ्य को नहीं जानते थे। हम शरीर को नश्वर मानते हैं और आत्मा को अविनाशी मानते हैं। शिव तो सर्वात्मा हैं, शक्ति दाता शिव शाश्वत हैं, इसीलिए हजारों वर्ष के बाद भी अटूट आस्था के बीच सोमनाथ मंदिर आज अडिग खड़ा है।

प्रधानमंत्री ने आगे कहा कि पिछले एक दशक से उन्हें भारत के तीर्थस्थानों को विकसित करने का अवसर मिला है। भारत की सांस्कृतिक विरासतों के पुनर्जागरण और 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने काशी विश्वनाथ, केदारनाथ, अयोध्या और सोमनाथ जैसी विरासतों के विकास और गौरव का वर्णन किया। उन्होंने इन तीर्थस्थलों के विकास से हो रही देश की आर्थिक प्रगति का उल्लेख करते हुए कहा कि इन पर्यटन और तीर्थ स्थानों के साथ हजारों लोगों का जीवन भी जुड़ा हुआ है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत की प्राचीन परंपराओं और विरासतों के संरक्षण में अनेक विभूतियों का योगदान है। उन्होंने भीमदेव प्रथम, राजा भोज, कुमारपाल और राव खेंगार सहित अनेक विभूतियों का उल्लेख करते हुए सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण में सरदार वल्लभभाई पटेल के संकल्प और उनके साथ कन्हैयालाल मुंशी, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी और जाम साहब को भी इस अवसर पर याद कर उनके योगदान को प्रेरणादायी बताया।

सोमनाथ के लिए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले वीर हमीरसिंह गोहिल और वेगड़ा भील को याद करते हुए उन्होंने कहा कि सोमनाथ मंदिर के निर्माण में योगदान देने वाली अहिल्याबाई होल्कर और वडोदरा के गायकवाड़ जैसी विभूतियों ने सोमनाथ दादा की सेवा में अपना जीवन समर्पित किया। उन्होंने कहा कि आज दुनिया प्राकृतिक जीवनशैली की ओर लौट रही है, तब भारत की परंपराओं में तो नदियों, पर्वतों और वृक्षों को पवित्रता के भाव से देखा जाता है। उन्होंने इस अवसर पर प्रकृति को भी ईश्वर का एक स्वरूप बताते हुए प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण का संदेश भी दिया।

इस अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि भगवान सोमनाथ का मंदिर सदियों से देश की आस्था, संस्कृति, अडिग संकल्प और पुनर्जागरण का जीवंत प्रतीक रहा है। सोमनाथ मंदिर को विध्वंस के अनेक प्रयास हुए और हर विनाश के बाद यह मंदिर और अधिक तेजस्विता के साथ फिर से उठ खड़ा हुआ। लौह पुरुष सरदार पटेल साहब ने भगवान सोमनाथ के इस पुरातन मंदिर का उसकी भव्यता के साथ पुनर्निर्माण करने का जो संकल्प किया था, वह 11 मई, 1951 को पूर्ण हुआ। उस गौरवशाली विरासत को आज 75 वर्ष पूरे हो चुके हैं। मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2001 में तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में दायित्व संभालते ही हमें सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का स्वर्ण जयंती उत्सव मनाने का अवसर दिया, और आज सरदार साहब के दृढ़ संकल्प के साकार होने का यह अमृत उत्सव प्रधानमंत्री की प्रेरणा से देश की आजादी के अमृत काल में ही आया है, जो सोने पर सुहागा के समान अवसर है। यह दिव्य मंदिर विध्वंस से पुनर्निर्माण के सरदार साहब के अडिग संकल्प, मजबूत इरादों और राष्ट्र के आत्मसम्मान का प्रतीक बन गया है।

उन्होंने कहा कि अयोध्या में राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक अवसर पर 'देव से देश' का विजन देने वाले प्रधानमंत्री ने देशवासियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सनातन हिन्दू संस्कृति के पुनर्जागरण का भाव प्रबल बनाया है।

प्रधानमंत्री ने सोमनाथ मंदिर पर 1 हजार वर्ष के दौरान हुए आक्रमणों के खिलाफ शौर्य दिखाने वाले शूरवीर योद्धाओं को याद करते हुए सोमनाथ स्वाभिमान पर्व, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, केदारनाथ धाम विकासक, पावागढ़ में 500 वर्षों के बाद ध्वजारोहण, अंबाजी कॉरिडोर और सोमनाथ-तमिल संगमम जैसे आयोजनों से 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र को साकार किया है।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने स्मारक डाक टिकट और 75 रुपए के स्मारक सिक्के का अनावरण किया।

गुजरात के कैबिनेट मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने कहा कि कई आक्रमणों के बावजूद हमारी अटूट आस्था का प्रतीक सोमनाथ आज भी अडिग खड़ा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी विजन से हमारी संस्कृति और अध्यात्म की नींव पर भारत विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर है। श्री वाघाणी ने इस अवसर पर सोमनाथ मंदिर के स्वप्नदृष्टा सरदार वल्लभभाई पटेल को याद करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि भी अर्पित की।

जामनगर से सोमनाथ पहुंचने के बाद प्रधानमंत्री ने रोड शो में जनता का अभिवादन स्वीकार किया। बाद में, उन्होंने सोमनाथ मंदिर में महादेव की महापूजा की और कुंभाभिषेक किया।

कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी, राज्य के मंत्रीगण सर्वश्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, डॉ. प्रद्युमनभाई वाजा, कौशिकभाई वेकरिया, सांसद श्री राजेशभाई चूड़ासमा, सोमनाथ ट्रस्ट के ट्रस्टीगण सर्वश्री जे.डी. परमार, पी.के. लहरी, हर्षवर्धन नेओटिया, विषदभाई मफतलाल, विधायकगण सर्वश्री भगाभाई बारड़ और काळुभाई राठोड़ आदि मौजूद रहे।

भावनगर रेलवे मंडल के जूनागढ़ स्टेशन पर सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम का आयोजन

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा की प्रेरणा से शुक्रवार को जूनागढ़ रेलवे स्टेशन पर एक भव्य सांस्कृतिक संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन तथा सहायक कार्मिक अधिकारी श्री संतोष वर्मा विशेष रूप से उपस्थित रहे।

इस अवसर पर संगीत, नृत्य, भाषण, म्यूजिकल चेयर सहित विभिन्न सांस्कृतिक एवं मनोरंजक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें रेल कर्मचारियों तथा उनके बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। पूरे कार्यक्रम के दौरान उत्साह, उमंग और पारिवारिक सौहार्द का वातावरण बना रहा।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि सभी कार्यक्रम अत्यंत सफलतापूर्वक एवं आकर्षक ढंग से संपन्न हुए। प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी एवं सहायक कार्मिक अधिकारी द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर सहायक कार्मिक अधिकारी श्री संतोष वर्मा ने कर्मचारियों को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहने, कार्यस्थल पर स्वच्छता बनाए रखने

तथा जीवन में निरंतर प्रगति के लिए प्रयासरत रहने हेतु प्रेरित किया। वहीं वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन ने कर्मचारी भविष्य निधि (पीएफ) से संबंधित विभिन्न लाभों एवं सुविधाओं के बारे में कर्मचारियों को विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

यह आयोजन कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के लिए न केवल मनोरंजन का अवसर बना, बल्कि आपसी संवाद, जागरूकता एवं संगठनात्मक एकता को भी सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुआ। पश्चिम रेलवे का भावनगर मंडल भविष्य में भी कर्मचारियों के सर्वांगीण विकास एवं कल्याण के लिए ऐसे कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का वडोदरा में भव्य रोड शो

डेढ़ किलोमीटर लंबे रोड शो में 16 मंचों से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की सांस्कृतिक झांकी के साथ अपूर्व लोक-अभिवादन

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी सोमवार दोपहर बाद जब अपनी कर्मभूमि वडोदरा की विशेष यात्रा पर पहुंचे, तब उन्होंने सरदारधाम के लोकार्पण के बाद जनता के दर्शन तथा लोक संवाद के अनूठे सेतु के रूप में रोड शो के माध्यम से गदा सर्किल से एयरपोर्ट के गेट तक सार्वजनिक यात्रा कर लोक अभिवादन स्वीकार किया। इसमें वडोदरा की जनता ने अपने लाड़ले जननायक का भारी हर्षोल्लास तथा उत्साहपूर्वक स्वागत किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अभिवादन स्वीकार किए जाने से लोक उत्साह दुगुना हो गया।

लगभग डेढ़ किलोमीटर लंबे इस ऐतिहासिक मार्ग पर वडोदरावासियों में प्रधानमंत्री की झलक देखने तथा उनका अभिवादन करने के लिए अभूतपूर्व उत्साह देखने को मिला। वडोदरा महानगर पालिका तथा सम्बद्ध प्रशासन द्वारा की गई सुनियोजित एवं व्यापक व्यवस्था के हिस्से के रूप में मार्ग पर लगभग 16 सुसज्जित मंच बनाए गए थे। इन मंचों से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की प्रधानमंत्री की परिकल्पना को साकार करने वाली अनेक अभिनव सांस्कृतिक कृतियां प्रस्तुत की गईं, जिन्होंने उपस्थित सबके मन को मोह लिया।

गदा सर्किल पर प्रथम मंच पर से रोड शो के प्रारंभ पर पदाधिकारियों ने प्रधानमंत्री का अत्यंत भावपूर्ण एवं ऊष्मापूर्ण अभिवादन किया। इसके बाद गुजरात की अस्मिता के प्रतीक समान गरबा की ऊर्जापूर्ण प्रस्तुति के साथ यह यात्रा आगे बढ़ी। मार्ग में क्रमिक मंचों से विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक झांकियां प्रस्तुत की गईं। इनमें बंगाली कलाकारों की नयनरम्य प्रस्तुति, असम की ऐतिहासिक विजय तथा विरासत को उजागर करने वाले बिहु नृत्य, सरदार साहब के प्रत्येक जीवन मूल्य की झांकी, तमिलनाडु के शास्त्रीय भरतनाट्यम, केरल के कांतारा कला समूह की आकर्षक कृति, मणिपुरी नृत्य, केरल तथा ओडीशा के कथकली तथा जगत जननी महाकाली के पूजन पर आधारित भक्तिमय कृतियां शामिल हैं।

इसके अलावा बाल गुरुजी द्वारा नादस्वरम, रामायण के विषय-वस्तु पर केंद्रित 'अयोध्या' नृत्य, प्रधानमंत्री की राष्ट्र विकास की योजनाओं पर आधारित 'जय जय गरवी गुजरात – मेक इन इंडिया' थीम, भारतीय सेना की शूरवीरता के प्रतीक 'ऑपरेशन सिंदूर', सिगारी मेलम ढोल वादन तथा सुप्रसिद्ध पंजाबी भांगड़ा द्वारा कुशल कलाकारों ने प्रधानमंत्री का भव्य एवं अति अविस्मरणीय सांस्कृतिक स्वागत किया।

इस समग्र कार्यक्रम में अनेकता में एकता तथा भारतीय सांस्कृतिक श्रेष्ठता की विरासत को आधुनिक विकास तथा राष्ट्रीय सुरक्षा की सज्जता से जोड़कर 'अतुल्य भारत-सुदर्शनीय भारत' की उत्कृष्ट झांकी प्रस्तुत की गई। वडोदरा की भावुक जनता ने इन ऐतिहासिक क्षणों का मन भरकर आनंद उठाया। अपने प्रिय नेता के भावपूर्ण अभिवादन की यह सुगंध लंबे समय तक वडोदरा के लोगों के हृदय में जीवंत रहेगी।

इस रोड शो में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी तथा संगठन के अध्यक्ष श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा उपस्थित रहे।

क्रूड ऑयल वायदा में 360 रुपये का ऊछाल: सोना वायदा 124 रुपये नरम, चांदी वायदा में 4414 रुपये की वृद्धि

मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 221044.93 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 31954.63 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 189090.19 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का मई वायदा 36997 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3532.27 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 20560.74 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा 152487 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 154434 रुपये और नीचे में 151500 रुपये पर पहुंचकर, 152530 रुपये के पिछले बंद के सामने 124 रुपये या 0.08 फीसदी गिरकर 152406 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी मई वायदा 265 रुपये या 0.22 फीसदी गिरकर 122510 रुपये प्रति 8 ग्राम हुआ। गोल्ड-पेटल मई वायदा 32 रुपये या 0.21 फीसदी गिरकर 15353 रुपये प्रति 1 ग्राम हुआ। सोना-मिनी जून वायदा सत्र के आरंभ में 152160 रुपये के भाव पर खूलकर, 154538 रुपये के दिन के उच्च और 151440 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 169 रुपये या 0.11 फीसदी गिरकर 152298 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ। गोल्ड-टेन मई वायदा प्रति 10 ग्राम सत्र के आरंभ में 152226 रुपये के भाव पर खूलकर, 155400 रुपये के दिन के उच्च और 151684 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 152751 रुपये के पिछले बंद के सामने 203 रुपये या 0.13 फीसदी गिरकर 152548 रुपये प्रति 10 ग्राम हुआ।

चांदी के वायदाओं में चांदी जुलाई वायदा 264535 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 266355 रुपये और नीचे में 260986 रुपये पर पहुंचकर, 261922 रुपये के पिछले बंद के सामने 4414 रुपये या 1.69 फीसदी बढ़कर 266336 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। इनके अलावा चांदी-मिनी जून वायदा 3746 रुपये या 1.42 फीसदी की मजबूती के साथ 268014 रुपये प्रति किलो बोला गया। जबकि चांदी-माइक्रो जून वायदा 3664 रुपये या 1.39

फीसदी की तेजी के संग 267956 रुपये प्रति किलो हुआ।

मेटल वर्ग में 4087.37 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा मई वायदा 24.05 रुपये या 1.82 फीसदी बढ़कर 1349 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता मई वायदा 2.8 रुपये या 0.8 फीसदी की तेजी के संग 351 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इसके सामने एल्यूमीनियम मई वायदा 7.1 रुपये या 1.93 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 375.5 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा मई वायदा 1.55 रुपये या 0.77 फीसदी की तेजी के संग 201.95 रुपये प्रति किलो हुआ। इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 6894.72 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल मई वायदा सत्र के आरंभ में 9384 रुपये के भाव पर खूलकर, 9562 रुपये के दिन के उच्च और 9228 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 360 रुपये या 3.99 फीसदी की बढ़त के साथ 9384 रुपये प्रति बैरल के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी मई वायदा 358 रुपये या 3.97 फीसदी की मजबूती के साथ 9384 रुपये प्रति बैरल बोला गया। इनके अलावा नैचुरल गैस मई वायदा सत्र के आरंभ में 262.7 रुपये के भाव पर खूलकर, 272.3 रुपये के दिन के उच्च और 262.7 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 261 रुपये के पिछले बंद के सामने 10.5 रुपये या 4.02 फीसदी की बढ़त के साथ 271.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि नैचुरल गैस-मिनी मई वायदा 10.4 रुपये या 3.98 फीसदी की तेजी के संग 271.6 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल मई वायदा सत्र के आरंभ में 987 रुपये के भाव पर खूलकर, 10 पैसे या 0.01 फीसदी के सुधार के साथ 990.7 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 11010.26 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 9550.48 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 3194.52 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 551.51 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 20.66 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 311.65 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

▸▸ कमोडिटी वायदाओं में 31954.63 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 189090.19 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 20560.74 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार : बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 36997 पॉइंट के स्तर पर

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 4535.32 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 2327.63 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 0.39 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 11546 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 65851 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 27257 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 371204 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 57383 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7463 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 22782 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 80640 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17293 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 31773 लोट के स्तर पर था। इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स मई वायदा 36997 पॉइंट पर खूलकर, 36997 के उच्च और 36997 के नीचले स्तर को छूकर, 152 पॉइंट घटकर 36997 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल मई 10000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 12.4 रुपये की बढ़त के साथ 110.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 4.35 रुपये की बढ़त के साथ 11.5 रुपये हुआ।

सोना मई 155000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 68 रुपये की गिरावट के साथ 1716 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 246.5 रुपये की बढ़त के साथ 1450 रुपये हुआ। तांबा मई 1400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.88 रुपये की बढ़त के साथ 8.69 रुपये हुआ। जस्ता मई 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 12 पैसे की नरमी के साथ 3.91 रुपये हुआ। पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल मई 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 213.2 रुपये की गिरावट के साथ 158.3 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस मई 270 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 5.95 रुपये की गिरावट के साथ 10.1 रुपये हुआ। सोना मई 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 84.5 रुपये की बढ़त के साथ 348.5 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी मई 230000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 130.5 रुपये की गिरावट के साथ 1069.5 रुपये हुआ। तांबा मई 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 5.67 रुपये की गिरावट के साथ 9.43 रुपये हुआ। जस्ता मई 340 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 59 पैसे की नरमी के साथ 1 रुपये हुआ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वडोदरा में नवनिर्मित सरदारधाम का लोकार्पण किया

150 करोड़ रुपए की लागत से बने सरदारधाम में 2000 छात्रों को व्यावसायिक और प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण दिया जाएगा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

- प्रधानमंत्री ने वैश्विक आर्थिक हालात को ध्यान में रखकर देश को स्पष्ट मार्गदर्शन दिया
- सरकार इस बात को लेकर लगातार प्रयारत है कि वर्तमान हालात में देश के आम नागरिकों पर कम से कम बोझ पड़े
- पेट्रोल और डीजल का उपयोग संभव हो उतना कम करके मेट्रो, इलेक्ट्रिक वाहन और सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करना चाहिए
- सोने के आयात पर होने वाले बड़े खर्च को ध्यान में रखते हुए सोने की खरीदी टालनी चाहिए
- प्रधानमंत्री ने देश की विदेशी मुद्रा की बचत और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए देश के अंदर पर्यटन को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता की वकालत की
- प्रधानमंत्री ने शैक्षणिक संस्थानों को भी आवश्यक हो वहां समयबद्ध ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था पर विचार करने का प्रेरक सुझाव दिया

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- सरदार साहब के सपनों का भारत बनाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी संकल्पबद्ध हैं
- सरदारधाम जैसे संस्थान समाज शक्ति के माध्यम से शिक्षा और संस्कार का कार्य करके राष्ट्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं
- सरदारधाम मिशन-2026 के अंतर्गत समाज द्वारा किए गए पांच संकल्पों को साकार करने की दिशा में यह संकुल महत्वपूर्ण साबित होगा
- दुनिया के किसी भी कोने में बसा पाटीदार समाज गुजरात की पहचान और अभिमान को गौरव दिलाने वाला समाज है
- समाज निर्माण से राष्ट्र निर्माण के मार्ग पर आगे बढ़कर विकसित गुजरात के निर्माण के लिए सभी साथ मिलकर कार्य करेंगे

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्तमान वैश्विक हालात को ध्यान में रखकर देश का मार्गदर्शन करते हुए कहा कि मौजूदा समय में विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव डालने वाली गतिविधियों को कम करना होगा। देश की आर्थिक मजबूती के लिए स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहन देने की अपील करते हुए प्रधानमंत्री ने 'वोकल फॉर लोकल' को जनांदोलन बनाने की आवश्यकता व्यक्त की। सोमवार को वडोदरा में सरदारधाम-3 के लोकार्पण अवसर पर उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर पिछले कुछ वर्षों में पैदा हुए अस्थिर हालात, जिसमें कोरोना महामारी, वैश्विक आर्थिक चुनौतियां तथा पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्ष के चलते पैदा हुए हालात का पूरी दुनिया पर व्यापक प्रभाव देखने को मिल रहा है। सरकार इस बात को लेकर लगातार प्रयासरत है कि वर्तमान हालात में देश के आम नागरिकों पर कम से कम बोझ पड़े। उन्होंने कहा कि इस संदर्भ में नागरिकों की सक्रिय जनभागीदारी और जिम्मेदार दृष्टिकोण समय की मांग है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी सहित महानुभावों ने यहां वाघोड़िया चौराहे के पास पाटीदार समाज की ओर से निर्मित सरदारधाम का लोकार्पण करने के बाद उसका निरीक्षण किया। 150 करोड़ रुपए की लागत से बने सरदारधाम में दो हजार छात्र-छात्राओं को

प्रतियोगी परीक्षाओं का प्रशिक्षण दिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने वहां सरदार साहब की प्रतिमा को वंदन भी किया। श्री मोदी ने देश के संसाधनों पर पड़ रहे अतिरिक्त बोझ को कम करने के लिए नागरिकों से ईंधन के संयमित और विवेकपूर्ण उपयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि पेट्रोल और डीजल का उपयोग संभव हो उतना कम करना चाहिए। मेट्रो, इलेक्ट्रिक बस और सार्वजनिक परिवहन का अधिक उपयोग करने, कार पूलिंग को प्रोत्साहन देने तथा सरकारी और निजी क्षेत्र में वर्चुअल मीटिंग्स एवं वर्क फ्रॉम होम को वरीयता देनी चाहिए। उन्होंने शैक्षणिक संस्थानों को भी आवश्यक हो वहां समयबद्ध ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था पर विचार करने का सुझाव दिया। श्री मोदी ने देश के विदेशी मुद्रा भंडार का एक बड़ा हिस्सा क्रूड ऑयल और खाद्य तेल के आयात पर खर्च होता है, इसे ध्यान में रखकर खाद्य तेल के उपयोग में संयम रखने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने की सीख दी। उन्होंने कहा कि सोने के आयात पर होने वाले बड़े खर्च को ध्यान में रखते हुए मौजूदा हालात के सामान्य होने तक सोने की खरीदी को टालना चाहिए। प्रधानमंत्री ने 'वोकल फॉर लोकल' अभियान को जनांदोलन का स्वरूप देने, स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहन देने तथा देश के उद्योगकारों को मजबूत बनाने पर भी जोर दिया। कृषि क्षेत्र में स्वदेशी और टिकाऊ प्रणालियों को अपनाने की आवश्यकता पर बल देते हुए प्रधानमंत्री ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने, रासायनिक खाद पर निर्भरता को कम करने तथा डीजल पंप के स्थान पर सोलर पंप का उपयोग बढ़ाने का अनुरोध किया। प्रधानमंत्री ने देश की विदेशी मुद्रा की बचत और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए देश के अंदर पर्यटन को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता की वकालत की। उन्होंने कहा कि गर्मी की छुट्टियों के दौरान विदेश यात्रा के बजाय देश के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थानों की यात्रा करें। 'डेस्टिनेशन वेडिंग' के लिए भारत के स्थानों को प्राथमिकता देने तथा गुजरात के एकता नगर में स्थित स्टैच्यू ऑफ यूनिटी जैसे पर्यटन केंद्रों में ऐसे समारोह आयोजित किए जाने चाहिए। इसके साथ ही, उन्होंने कहा कि विदेश में रहने वाले भारतीयों को भी विदेशी नागरिकों को भारत के पर्यटन स्थलों की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। वडोदरा में सरदारधाम-3 का लोकार्पण करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि आज का दिन पुण्य पर्व के समान है। सोमनाथ मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर प्रभास पाटण में सोमनाथ अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है, तब सरदार पटेल के संकल्पों से प्रेरित सरदारधाम के साथ जुड़ी महत्वपूर्ण परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास विशेष महत्व रखता है। उन्होंने डॉ. दुष्यंत और दक्षा पटेल कॉम्प्लेक्स के लोकार्पण, शिक्षण सहाय योजना और नई योजनाओं के भूमिपूजन को राष्ट्र निर्माण के प्रभावी प्रकल्प बताया। प्रधानमंत्री ने सरदारधाम की ओर से शिक्षा और युवाओं के सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे संस्थान युवाओं के भविष्य के लिए 'लॉन्चिंग पैड' के समान साबित होंगे। उन्होंने इस कार्य के लिए समाज के सभी अग्रणियों और सदस्यों को बधाई दी। प्रधानमंत्री ने हाल ही में पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी के चुनाव नतीजों तथा गुजरात के स्थानीय निकायों और पंचायत चुनावों में प्राप्त सफलता का उल्लेख करते हुए कहा कि गुजरात के लोगों ने हमेशा राजनीतिक स्थिरता को महत्व दिया है। राजनीतिक स्थिरता अर्थव्यवस्था के विकास को गति देती है और गुजरात ने यह बात बहुत पहले ही समझ ली थी। उन्होंने कहा कि समाज में स्थायी एवं व्यापक परिवर्तन सामूहिक शक्ति से ही संभव होता है। विशेषकर शिक्षा को प्राथमिकता देने वाले समाजों ने निरंतर प्रगति की है। सरदारधाम के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि अहमदाबाद, सूरत, राजकोट, भुज, मेहसाणा तथा दिल्ली आदि केंद्र युवाओं के भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने अहमदाबाद में कन्याओं के लिए नए विद्यार्थी निवास के भूमिपूजन का भी उल्लेख किया। शिक्षा क्षेत्र में सरकार के सुधारात्मक प्रयासों की चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि भाषा के आधार पर होने वाले भेदभाव को दूर करने के लिए कौशल विकास, नवाचार, अनुसंधान तथा एप्रेंटिसशिप के अवसरों से युवाओं को अधिक सक्षम बनाया जा रहा है। उन्होंने जोड़ा कि आने वाले समय में देश को विशाल कुशल मानव संसाधन मिलेगा, जो मैन्युफैक्चरिंग क्षेत्र को अधिक मजबूत बनाएगा। गुजरात के युवाओं में विद्यमान उद्यमिता शक्ति की प्रशंसा करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि स्टार्टअप इंडिया अभियान से छोटे शहरों के युवा भी उद्यमी बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि महिलाओं की भागीदारी में लगातार वृद्धि हो रही है और खेल-कूद से लेकर स्पेस टेक्नोलॉजी तक देश की उपलब्धियां युवा शक्ति की प्रतिबिंब हैं। प्रधानमंत्री ने गुजरात के भविष्योन्मुखी विकास मॉडल का उल्लेख करते हुए कहा कि सेमीकंडक्टर, एयरोस्पेस, ग्रीन एनर्जी, एडवांस इंजीनियरिंग तथा फाइनेंसियल सर्विसेज जैसे क्षेत्रों में गुजरात नई पहचान स्थापित कर रहा है। उन्होंने कहा कि आज जब साणंद, धोलेरा तथा सूरत में सेमीकंडक्टर प्रोजेक्ट्स आगे बढ़ रहे हैं, तब वडोदरा मैन्युफैक्चरिंग एवं परिवहन क्षेत्र में महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभर रहा है। वडोदरा के औद्योगिक विकास की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यहां निर्मित मेट्रो कोचेस विदेशों में निर्यात हो रहे हैं, जबकि सावली में आधुनिक रेल कोचेस का उत्पादन हो रहा है। उन्होंने कहा कि इंजीनियरिंग, केमिकल, फार्मा, हेवी मशीनरी तथा पावर इक्विपमेंट जैसे क्षेत्रों में वडोदरा मजबूत केंद्र बना है। उन्होंने कहा कि गतिशक्ति यूनिवर्सिटी परिवहन तथा लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के लिए कुशल मानव संसाधन तैयार कर रही है। पाटीदार रत्न गौरव अवॉर्ड के प्रतिभाव में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, "अपने घर में ही और परिवार के लोगों द्वारा सम्मान होना आनंददायक है। इस अवॉर्ड के बाद मेरी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। सरदार साहब के अधूरे सपने को साकार करने की जिम्मेदारी मुझ पर आई है और मैं उसका निर्वहन कर रहा हूं। सबको पता है कि मैं एक बार निश्चय करता हूं, तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखता।" मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी सरदार साहब के सपनों के भारत के निर्माण के लिए संकल्पबद्ध हैं। श्री पटेल ने कहा कि भारत को एक करने के सरदार साहब के संकल्प को प्रधानमंत्री ने धारा 370 हटाकर साकार किया है।

डिजिटल आवेदन में एक छोटी सी गलती भी बड़ी गलती बन सकती है, फॉर्म जमा करने से पहले पूर्ण सत्यापन आवश्यक है: उच्च न्यायालय

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात उच्च न्यायालय का हालिया फैसला ऑनलाइन आवेदन करने वाले उम्मीदवारों के लिए एक चेतावनी है। क्योंकि, ऑनलाइन प्रक्रिया में कोई भी गलती रह जाने पर सिस्टम उसे स्वीकार नहीं करता या सत्यापन के दौरान समस्या उत्पन्न हो जाती है। आखिरकार, डिजिटल युग में जागरूकता ही सबसे बड़ा बचाव है। उम्मीदवार को यह समझना चाहिए कि एक बार "सबमिट" बटन दबाने के बाद, अक्सर सुधार करने का कोई अवसर नहीं होता है। गलत जानकारी जमा करने से न केवल उम्मीदवारी रद्द हो सकती है, बल्कि कानूनी कार्रवाई या जुर्माना भी हो सकता है। इसलिए, प्रत्येक उम्मीदवार के लिए फॉर्म भरने से पहले सूचना पुस्तिका को पढ़ने और गाइड वीडियो देखने में एक घंटा व्यतीत करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि उनकी मेहनत और योग्यता व्यर्थ न जाए।

गुजरात उच्च न्यायालय ने आगे कहा कि "इस डिजिटल युग में, आवेदक को आवश्यक दस्तावेजों के साथ आवेदन जमा करने से पहले उचित सावधानी बरतनी चाहिए। ऐसा न करने पर, आवेदक को बाद में शिकायत करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।" आवेदन के साथ अपलोड किए जाने वाले अनिवार्य दस्तावेज जैसे फोटो, मार्कशीट, जाति प्रमाण पत्र या अनुभव प्रमाण पत्र केवल निर्धारित आकार और प्रारूप में ही अपलोड किए जाने चाहिए। यदि किसी शैक्षणिक योग्यता में कोई ग्रेड दिया गया है, तो उसे मार्कशीट के साथ रखें और विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार अपलोड करें। क्योंकि इसके न होने पर, योग्य होने के बावजूद भी उम्मीदवार को प्रक्रिया से बाहर किया जा सकता है। अंत में, डिजिटल युग में जागरूकता ही सबसे अच्छा बचाव है। तो दोस्तों, अब जबकि कक्षा 10 और 12 के परिणाम घोषित हो चुके हैं, उपरोक्त बातों का विशेष ध्यान रखें। शुभकामनाएं!

लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता को लेकर उठे सवाल: सत्ता चुनाव और संस्थाओं पर नियंत्रण को लेकर चिंताएं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमारा देश एक लोकतांत्रिक संविधान द्वारा शासित और धर्मनिरपेक्षता के प्रति प्रतिबद्ध देश है। इसे ध्यान में रखते हुए, सत्ता का दुरुपयोग करके हिंदुत्व को लागू करने के लिए एक संपूर्ण भावी एजेंडा तैयार किया गया है। इस संबंध में सामने आ रहे परिणामों और आगामी परिणामों को देखकर पूरा देश और इस देश के धर्मनिरपेक्ष बुद्धिजीवी भी आश्चर्यचकित हैं। यह सब देश में लोकतंत्र को आगे बढ़ाने के लिए खुलेआम सत्ता के दुरुपयोग के रूप में देखा जा रहा है, क्या यह स्पष्ट नहीं है?

लोकतंत्र के अनुसार, देश एक ही बार में अपनी सत्ता हासिल नहीं कर सकता। इसलिए, अपनी ही योजना के अनुसार, विभिन्न राज्यों में होने वाले चुनावों में, अपनी शक्ति का दुरुपयोग करते हुए,

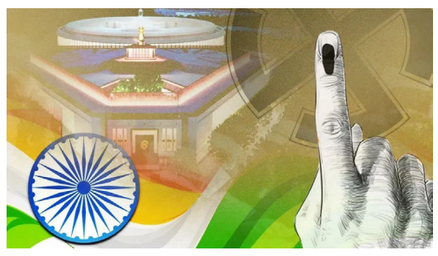

ईडी से लेकर चुनाव आयोग और अंत में अदालतों तक, सभी क्षेत्रों में अपने लोगों को तैनात करके एकतरफा माहौल बनाया गया है। न केवल पूरा देश, बल्कि अन्य देश भी इसे देख रहे हैं। गोदी मीडिया का पूरा गठजोड़ खड़ा कर दिया गया है। हमारे इस लोकतांत्रिक देश में कानून व्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई है। अब इसे राज्यों के हिसाब से विभाजित कर दिया गया है। पूरे देश पर एक ही बार में कब्जा नहीं किया जा सकता।

यदि बिहार, कर्नाटक, महाराष्ट्र, दिल्ली जैसे पूर्व राज्यों में हुए चुनावों और वर्तमान में पांच राज्यों में हुए चुनावों का अवलोकन किया जाए, तो सभी संसाधनों का उपयोग करके इसने राज्य चुनावों में जीत हासिल की है (वर्तमान में भाजपा का 22 राज्यों पर नियंत्रण है)।

आगामी 2029 के लोकसभा चुनावों का स्वरूप कैसा होगा? देश के लोकतंत्र और सांप्रदायिकता से दूर रहने की स्थिति में इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? अंततः, यह कहना व्यर्थ नहीं होगा कि देश का लोकतंत्र खतरे में है।

सुरक्षा, सेवा और समर्पण: RPF अहमदाबाद मंडल की वर्ष 2025-26 की उल्लेखनीय उपलब्धियां

ऑपरेशन 'अमानत' से 'जीवन रक्षा' तक: सुरक्षा के मोर्चे पर RPF अहमदाबाद का उत्कृष्ट प्रदर्शन

पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल का रेलवे सुरक्षा बल (RPF) यात्रियों की सुरक्षा, रेलवे संपत्ति की रक्षा और स्टेशनों पर सुरक्षित वातावरण बनाए रखने के लिए पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य कर रहा है। अहमदाबाद मंडल के रेलवे सुरक्षा बल (RPF) ने वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान सुरक्षा, अपराध नियंत्रण, यात्री सहायता तथा मानवीय सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करते हुए कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। रेलवे सुरक्षा बल ने यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने, रेलवे संपत्ति की रक्षा करने तथा रेलवे परिसरों में अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण बनाए रखने के लिए लगातार सतर्कता एवं सक्रियता के साथ कार्य किया। इसके साथ ही RPF कर्मियों ने मानवीय संवेदनाओं का परिचय देते हुए जरूरतमंद यात्रियों, बच्चों एवं महिलाओं की सहायता कर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का भी सफलतापूर्वक निर्वहन किया।

रेलवे अधिनियम के अंतर्गत प्रभावी कार्रवाई

वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान RPF अहमदाबाद मंडल द्वारा रेलवे अधिनियम की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत कुल 29,276 प्रकरण दर्ज किए गए। इन मामलों में प्रभावी कार्रवाई करते हुए 40 लाख का जुर्माना वसूल किया गया। यह कार्रवाई रेलवे परिसरों में अनुशासन बनाए रखने, अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने तथा यात्रियों में नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

ऑपरेशन अमानत के तहत यात्रियों को लौटाया खोया सामान

यात्रियों द्वारा रेलवे स्टेशन अथवा ट्रेनों में भूलवश छोड़े गए अथवा खोए हुए सामान को खोजकर उसके वास्तविक मालिक तक पहुंचाने के उद्देश्य से चलाए जा रहे "ऑपरेशन अमानत" के तहत RPF अहमदाबाद मंडल ने उल्लेखनीय सफलता हासिल की। इस दौरान 1,58,51,286/- मूल्य के 462 लावारिस अथवा खोए हुए सामान बरामद किए गए तथा आवश्यक सत्यापन के बाद उन्हें उनके वास्तविक मालिकों को सौंप दिया गया।

ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते: मानवीय सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण

RPF द्वारा चलाए जा रहे "ऑपरेशन नन्हे फरिश्ते" के अंतर्गत रेलवे स्टेशन एवं ट्रेनों में भटके हुए, लापता अथवा असहाय बच्चों एवं जरूरतमंद व्यक्तियों की सहायता की गई। इस अभियान के तहत 121 बच्चों तथा 23 पुरुषों एवं महिलाओं को सुरक्षित बचाकर उनके परिजनों, चाइल्ड लाइन अथवा संबंधित पुलिस अधिकारियों को सौंपा गया।

ऑपरेशन रेल सुरक्षा के तहत बड़ी सफलता

रेलवे संपत्ति (अवैध कब्जा) अधिनियम [RP(UP) Act] के अंतर्गत दर्ज 49 मामलों में से 46 मामलों का सफलतापूर्वक पता लगाया गया। इन मामलों में रेलवे संपत्ति की चोरी, अवैध कब्जा एवं तस्करी जैसी गतिविधियों में शामिल 114 बाहरी व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। RPF की सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई के कारण रेलवे संपत्ति की सुरक्षा सुनिश्चित हुई तथा संगठित अपराधों पर प्रभावी रोक लगाई जा सकी।

ऑपरेशन यात्री सुरक्षा के माध्यम से अपराधियों पर शिकंजा

यात्रियों के सामान चोरी (TOPB) से संबंधित 49 आरोपियों को गिरफ्तार कर GRP को सौंपा गया। इसके अतिरिक्त भारतीय न्याय संहिता (BNS) की विभिन्न धाराओं के अंतर्गत 73 आरोपियों को गिरफ्तार कर आगे की कानूनी कार्रवाई हेतु GRP के हवाले किया गया। यह कार्रवाई रेलवे स्टेशनों एवं ट्रेनों में यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा अपराधियों में भय का वातावरण बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण रही।

UTI मामलों में उल्लेखनीय कमी

RPF अहमदाबाद मंडल द्वारा चलाए गए विशेष जागरूकता अभियानों एवं नियमित जांच अभियानों का सकारात्मक परिणाम सामने आया है। वित्तीय वर्ष 2024-25 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2025-26 में आकस्मिक घटना (UTI) के मामलों में 33 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई।

ऑपरेशन सतर्क के तहत अवैध शराब तस्करी पर कार्रवाई

अवैध शराब की तस्करी एवं परिवहन के विरुद्ध चलाए गए "ऑपरेशन सतर्क" के तहत 125 मामलों का पता लगाया गया। इन मामलों में 12,90,963/- मूल्य की अवैध शराब बरामद की गई तथा 102 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर आगे की कार्रवाई हेतु GRP को सौंपा गया। यह कार्रवाई मुख्यतः अहमदाबाद, साबरमती एवं कांकरिया यार्ड स्टेशनों पर की गई। RPF की इस कार्रवाई से रेलवे मार्गों के माध्यम से होने वाली अवैध गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित हुआ है।

ऑपरेशन नारकोस के तहत मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक

RPF अहमदाबाद मंडल ने मादक पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई करते हुए "ऑपरेशन नारकोस" के तहत 4 मामलों का पता लगाया। इन मामलों में 4,35,310/- मूल्य के नारकोटिक्स बरामद किए गए तथा 2 तस्करों को गिरफ्तार किया गया। यह कार्रवाई रेलवे परिसरों को नशामुक्त एवं सुरक्षित बनाए रखने की दिशा में महत्वपूर्ण रही।

ऑपरेशन जीवन रक्षा के तहत बचाई गई जानें

RPF कर्मियों ने सतर्कता एवं त्वरित प्रतिक्रिया का परिचय देते हुए प्लेटफॉर्म गैप, चलती ट्रेन अथवा अन्य दुर्घटनात्मक परिस्थितियों में फंसे 11 पुरुषों एवं महिलाओं की जान बचाई। "ऑपरेशन जीवन रक्षा" के अंतर्गत किए गए इन साहसिक कार्यों ने RPF की तत्परता एवं मानव जीवन के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाया है।

रेल मदद शिकायतों का त्वरित समाधान

रेल मदद (Rail Madad) पोर्टल पर वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान सुरक्षा संबंधी कुल 1,918 शिकायतें प्राप्त हुईं। RPF अहमदाबाद मंडल द्वारा सभी शिकायतों का 100 प्रतिशत निस्तारण सुनिश्चित किया गया। शिकायतों के समाधान का औसत समय मात्र 6 मिनट रहा, जो RPF की त्वरित कार्यशैली एवं दक्षता को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि 92.85 प्रतिशत यात्रियों ने RPF द्वारा प्रदान की गई सहायता एवं कार्रवाई को उत्कृष्ट अथवा संतोषजनक बताया।

वारंट निष्पादन में उत्कृष्ट प्रदर्शन

RA एवं RP(UP) Act से संबंधित जारी 113 वारंटों में से 95 वारंटों का सफल निष्पादन RPF अहमदाबाद द्वारा किया गया। यह उपलब्धि अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कानूनी कार्रवाई एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने की दिशा में RPF की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। RPF अहमदाबाद मंडल की ये उपलब्धियां दर्शाती हैं कि रेलवे सुरक्षा बल न केवल यात्रियों एवं रेलवे संपत्ति की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, बल्कि मानवीय सेवा, त्वरित सहायता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। यात्रियों की सुरक्षा एवं सुविधा सुनिश्चित करने के लिए RPF भविष्य में भी इसी प्रकार सतर्कता एवं समर्पण के साथ कार्य करती रहेगी।

सोमनाथ अमृत पर्व- 2026

विरासत और विकास के संगम तीर्थ पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने प्रथम ज्योतिर्लिंग श्री सोमनाथ महादेव के चरणों में शीश झुकाया

शंख एवं डमरू के नाद तथा अमृत कलश के साथ प्रधानमंत्री का भव्य स्वागत और अभिवादन; आस्था के अधिष्ठाता सोमनाथ महादेव देवालय में डमरू के नाद के साथ हर हर महादेव का नारा गूंजा

- सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के गौरवशाली 75 वर्ष पूर्ण; प्रधानमंत्री ने भगवान सोमनाथ की महापूजा, कुंभाभिषेक और ध्वजारोहण कर जन कल्याण के लिए प्रार्थना की
- प्रधानमंत्री ने सोमनाथ दिव्य देवालय के स्वप्नदृष्टा श्री सरदार पटेल को पुष्पांजलि अर्पित की
- वैभवशाली यशोगाथा के साथ सूर्यकिरण एरोबेटिक्स टीम की आकाशीय सलामी और हेलिकॉप्टर से पुष्पवर्षा से सोमनाथ का नभ गूंज उठा

गांधीनगर : भारतीय संस्कृति के तेज तथा अस्मिता के प्रतीक समान भगवान सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में 'सोमनाथ अमृत पर्व-2026' मनाया जा रहा है। सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण की विरासत के 75 वर्षों के इस ऐतिहासिक उत्सव में सहभागी बनने के लिए प्रधानमंत्री एवं सोमनाथ ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को प्रभास पाटण की पवित्र धरती पर पधारे।

स्वागत में झलकी विविधतापूर्ण विरासत :

प्रधानमंत्री के आगमन के समय वीर हमीरजी सर्कल के पास मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार पर भारत की विभिन्न संस्कृतियों की झलक प्रस्तुत करने वाली सांस्कृतिक प्रस्तुतियों द्वारा उनका विशेष अभिवादन किया गया। इस पथ पर प्रधानमंत्री ने सोमनाथ की थीम पर निर्मित आकर्षक रेत शिल्प को निहारा । 75 ढोलियों के साथ नासिक के ढोल और तूतियों के नाद के बीच पारंपरिक परिधान में सज्ज लगभग 100 बालिकाओं और कन्याओं ने सिर पर अमृत कलश धारण कर प्रधानमंत्री का हर्षोल्लास से स्वागत किया।

अखंड भारत के शिल्पकार श्री सरदार पटेल को पुष्पांजलि तथा भक्तिमय पूजन :

मंदिर परिसर में प्रवेश से पहले प्रधानमंत्री ने अंखड भारत के शिल्पकार तथा सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण के स्वप्नदृष्टा लौह पुरुष सरदार श्री वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा भावपूर्वक पुष्पांजलि अर्पित की। दिग्विजय द्वार के पास ऋषिकुमारों के शंख और डमरू के नाद के बीच विशेष 'बेल वॉक' से गुजरते हुए प्रधानमंत्री ने निज मंदिर में प्रवेश किए, जहां उन्होंने शास्त्रोक्त विधि से महापूजा कर देश की प्रगति और जन कल्याण के लिए प्रार्थना की।

आकाशीय सलामी और कुंभाभिषेक :

इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने सोमनाथ महादेव के देवालय पर कुंभाभिषेक और ध्वजारोहण किया। इस पवित्र क्षण में एयर फोर्स के दो चेतक हेलिकॉप्टरों द्वारा मंदिर शिखर पर पुष्पवर्षा भी की गई, जिसके साथ समुद्र तट पर सोमनाथ महादेव के सान्निध्य में दिव्य और भव्य वातावरण निर्मित हुआ। भारतीय वायुसेना की 'सूर्यकिरण' एरोबेटिक्स टीम द्वारा सोमनाथ के आकाश में प्रस्तुत किए गए रोमांचकारी एयर शो ने उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रधानमंत्री ने मंदिर परिसर में सोमनाथ की वैभवशाली विरासत और इतिहास को दर्शाती प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल तथा उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी भी उपस्थित रहे।